आपके पत्र

दीवाना अंक १२ मिला। इसका हर एक लेख लाजवाब था। खास करके मोटू-पतलू का लेख, काका के कारतूस व कहानी लाटरी का टिकट बहुत रोचक लगे। अगले अंक की इन्तजार में।

नरेन्द्र कुमार गुलाटी—लुधियाना

दीवाना का १२वां अंक प्राप्त हुआ। दीवाना का मुखपृष्ठ देखकर दस मिनट तक हँसी नहीं रुकी। इस अंक ने छपी सभी रचनायें अति सुन्दर लगीं। मुख्य रूप से 'सवाल यह है ?' 'बातों के कुछ नये डिज़ाइन', धारावाहिक उपन्यास 'बोलती खोपड़ी' बहुत पसन्द आई।

ज्ञानप्रकाश—गोरखपुर (उ० प्र०)

कहते हैं कि सब्र का फल मीठा होता है। लेकिन जब दीवाना का अंक १२वां मिला उस समय सब्र का बांध टूट चुका था। गुस्सा तो बहुत था लेकिन इस अंक के हाथ में आते ही जैसे सम्मोहित हो गया। बिना किसी शिकवे-शिकायत के यह अंक पढ़ा। वाकई अपने आपमें यह एक बेमिशाल अंक लगा। आदि मानव, मोटू-पतलू, छातों के नये डिजाइन तथा सिलबिल-पिलपिल काफी रोचक लगे। 'इस बार कुछ और खींचो' पढ़कर हंसते हंसते वह बुरा हाल हुआ कि क्या लिखूं। **उमेश ज्ञानचंदानी—नागपुर**

दीवाना अंक १२ पहली बार खरीदा। इसमें प्रकाशित सामग्री बहुत पसन्द आई। मुख पृष्ठ देख कर तो हंसते रहे। तीर अंदाजी का मेल बेहद पसन्द आया। पतलूजी ऐक्टर बने बड़ी प्रसन्नता हुई, उनकी कहानी पढ़ कर 'जम्मु को बेटी के जंगल में मंगल' छाते तो बेहद पसन्द आये।

एस० पी० 'आजाद'—कालांवाली

दीवाना अंक १२ बहुत इन्तजार के बाद प्राप्त हुआ। मुख पृष्ठ देखकर हंसी का फव्बारा फूट गया। मोटू-पतलू, बोलती खोपड़ी, लाटरी की टिकट, काका के कारतूस, आपस की बातें रोचक लगीं। गरीबचन्द की डाक ने इस बार मायूस किया। कृपया अगली बार अवश्य छापें। हमारी ओर से दीवाना दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करे।

नरेशकुमार गुलाटी—तिलकनगर मार्किट

अभी-अभी दीवाना का १२वां अंक हाथ लगा। मुख पृष्ठ देखते ही हँस-हँस कर पेट में बल पड़ गये। इस अंक में सभी कुछ अच्छा लगा। उसके लिए धन्यवाद। मुझे →

मुख पृष्ठ पर

रुकने वाले रुक गये
जाने वाले चले गये
तू क्या सोचे खड़ा खड़ा
रंग पीला देख, क्यों अड़ा।
बात समझ में आ गई
चिल्ली को भी आ गई
नहीं रहे कोई खतरा भाई
जब से लाल, पीली, हरी बत्ती लगाई॥

दीवाना अंक : १६ • वर्ष : १६
१५ अक्तूबर १६८०

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दर
वार्षिक चन्दा : ३५ रुपये अर्द्ध वार्षिक : १८ रुपये
एक प्रति : १.५० रुपये

चुटकले लिखने का काफी शौक है। अगर मैं आपको चुटकले भेजूं तो क्या आप उन्हें प्रकाशित करेंगे। अगले अंक के इन्तजार में।

राजेश चावला—सहारनपुर

अगर चुटकले हँसी से भरपूर और नयापन लिए हुए होंगे तो अवश्य छपेंगे।

—सं०

अंक नं० १४ प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ देखते ही बहुत हँसी आई। सिलबिल-पिल-पिल, शत्रुता का रहस्य और 'माडर्न ब्लैक मैजिक' बहुत अच्छे लगे। धारावाहिक कहानी 'बोलती खोपड़ी का रहस्य' अच्छी लगी। दीवाना को पाक्षिक कर आपने बहुत अच्छा किया है। नये अंक की प्रतीक्षा है।

राजेन्द्र सिंह बेदी—सितारगंज

आप दीवाना को नया रँग रूप देकर नई साँज-सज्जा के साथ प्रकाशित कर रहे हैं, यह तो बड़ी खुशी की बात है। लेकिन आप दीवाना को पाक्षिक कर रहे हैं यह तो हम दीवानों पर भारी जुल्म है। क्योंकि हम साप्ताहिक की इतनी बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं। जब यह दो सप्ताह में एक बार ही प्रकाशित होगी तो हमारा क्या हाल होगा ? आप अन्दाजा लगाइए कि हम दीवाना के दीवाने हैं ?

खैर, आशा है कि आप अपनी घोषणा के अनुरूप दीवाना को नए अन्दाज में और निश्चित समय पर हमें उपलब्ध करायेंगे।

एस बोगटी 'सानू'—नई दिल्ली-११००१६

दीवाना अंक १३ मिला, दीवाना मिलते ही प्रसन्नता हुई और दीवाना में 'ढोल की पोल का खुल जाना' पढ़कर मन में बार-बार हँसी आ रही है। मोटू-पतलू, फैंटम अच्छे लगे, धारावाहिक बोलती खोपड़ी का रहस्य भी अच्छा लगा। आशा करता हूँ कि इसी प्रकार आप दीवाना को सुव्यवस्थित रूप एवं हास्य की पत्रिका बनाने की कोशिश किया करोगे, गरीबचन्द जी की डाक बहुत अच्छी लगती है।

वेद प्रकाश द्विवेदी—

दीवाना का सितम्बर का अ[illegible] मजा आ गया। वाह ! क्या [illegible] सामग्री प्रकाशित की है। इनमें 'व्हिपी इन ए जिफ्फी' और 'ढोल[illegible] से मेरे और मेरी मित्र मंडली के [illegible] पेट में बल पड़ गए। 'काका [illegible] ओर 'मोटू-पतलू' के भी क्या [illegible] सम्पादक मण्डल मेरी ओर से शुभ[illegible] स्वीकार करें। आगामी अंक का इन्तजार है।

दीन दयाल शर्मा 'जोशी'—

सितम्बर का नया अंक प्राप्त [illegible] पृष्ठ पर चिल्ली सहाब को मेक[illegible] देख दिल गार्डन-गार्डन हो गया। [illegible] कियाँ तो मेकअप करती ही हैं[illegible] चिल्ली सहाब को मेकअप में देख [illegible] इस ओर अकर्षित होंगे। इस नेक[illegible] लिये चिल्ली साहब को हम सब [illegible] समाज की ओर से बधाई तथा शुभ[illegible] बोलती खोपड़ी, नामक उपन्यास बेह[illegible] रोमांच पूर्ण है। घसीटा राम हम[illegible] में आये थे, हमने उनकी पिक्चर [illegible] उन्होंने दस पैसे की जगह एक-एक[illegible] वसूल किया। मुकदमा दायर करेंगे [illegible]

अजीबा बातो-

दीवाना का नया अंक मनो[illegible] भरपूर था, दीवाना को पढ़कर हम [illegible] दीवाने हो गये !

मोटू-पतलू तो बहुत ही रोचक [illegible] कृपया घसीटा राम को हमारे शहर [illegible] हम भी उनका घाटा पूरा करने में म[illegible]

श्री कृष्ण की कहानी 'यदि ऐस[illegible] अच्छी लगी।

'मान लीजिए ऐसा हो तो, 'स[illegible] है,' 'ढोल की पोल का खुल जाना' [illegible] काफी रोचक लगे।

सुरजीत सिंह लाम्बा—फरीदाबा[illegible]


आयु केवल 10 वर्ष...
और वह
चैक साईन
कर रही है।
आपकी बिटिया बडी हो रही है
अब उसे चाहिए एक बैंक खाता
जिसमें वह अपनी भविष्य की
आवश्यकताओं को पूरा करने के
लिए पैसा जमा कर सके।
उसमें आत्मविश्वास जगाइए...
अब वह 10 वर्ष की है और
अपना खाता स्वयं चला सकती
है।
5/- रु० की छोटी सी राशि से
वह अपना खाता खोल सकती
है।
इसी उमर से बच्चों को बचत
करना सिखाइए। यही समय है
बच्चों में बचत की आदत
डालने का।
पंजाब नैशनल बैंक
(भारत सरकार का उपक्रम)
...भरोसे का प्रतीक!

काका के कारतूस



प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के

विपिन गोयल धुरीगेट, संगरूर
प्र-पत्नी से अधिक सुन्दर है मेरी साली,
पिलाऊं तो क्या पी लेगी प्रेम की प्याली ?
उ-सावधान रहना विपिन, हो सकते हो हूट,
यदि वह ठोकर मारदे, प्याली जाये टूट ।

राजेश कुमार गर्ग, मुजफ्फर नगर
प्र-कहते हैं, किसी गम में लोग दाढ़ी बढ़ाते हैं,
आपको क्या गम है ?
उ-अपनी दाढ़ी हास्य की, गम है कोसों दूर,
राजनारायण के लिए, यह मसला मशहूर ।

अखिलेश्वर प्रसाद चौधरी, उषा, विक्रमगंज
प्र-ऊपर वाला, दीन दुखियों की नहीं सुनता,
कौन है जो उसे समझाने जाए ?
उ-उड़कर संजय गांधी, पहुंचे उसके पास,
दुर्घटना ऐसी घटी, टूट गई सब आस ।

भगवान चौरसिया, बाजपुर (नैनीताल)
प्र-जिंदगी और जवानी का परस्पर क्या संबंध है ?
उ-जिन्दादिली व जवानी बहिनें खासमखास,
भाग्यवान वह व्यक्ति है, दोनों जिसके पास ।

मनोहरलाल भोटवानी,—रायगढ़(म० प्र०)
प्र-दिलदारों का दिल कब टूट जाता है ?
उ-पाली-पोसी प्रेमिका, कोई ले गया लूट,
चूर-चूर हो गया तब, दिलका दर्पण टूट ।

नरेन्द्र कुमार गुप्ता, नगलरोड. रूपनगर
प्र-कोई चालू किस्म की हसीना, किसी निर्दोष
को दोष लगा दे तो ?
उ-पक्ष नारि का लेंय सब दर्शक गुस्सम गुस्स,
पीट-पीट कर बनादें, बेचारे का भुस्स ।

सैयद अब्दुल जब्बार मस्ताना, बीकानेर
प्र-क्यों जी काका, दुश्मन भी दोस्त कब और
कैसे बन जाते हैं ?
उ-कल तलक दुश्मन बने जो, गालियां बरसा रहे,
मंत्रिपद हमको मिला तो आके हाथ मिला रहे ।

लवली सिंह नन्दा, रामगढ़ केन्ट
प्र-चोर, डाकू अपने उद्देश्य में सफल किस प्रकार
हो जाते हैं ?
उ-पुलिस मैन रेल-मेल में अच्छी ड्यूटी दे रहे,
डाकू स्लीपर लूट रहे हैं, वे खर्राटे ले रहे ।

किशन कुमार कक्कड़, हलद्वानी मंडी
प्र-चीनी के भाव आसमान छू रहे हैं, क्या करें
काकू ?
उ-ज्यादा चीनी खाये जनता, डाइबिटीज हो जाएगी,
इसलिए सरकार हमारी, भाव न नीचे लाएगी ।

ओम प्रकाश, मंजुबाला जोहर, चन्द्र नगर
प्र-काका साब, यदि भगवान ने आपको औरत
बनाया होता तो ?
उ-नारी होते तो हम नर को दिखलाते ऐसे जौहर,
बर्तन मलता चाय बनाता पैर दबाता नितशौहर ।

रमेश कुमार, इलाहबाद
प्र-सारे संसार का चक्कर, एक सैकिंड में कैसे
लगाया जा सकता है ?
उ-पलक मार कर कीजिए, बन्द आंख के द्वार,
मन से करलो कल्पना, घूम लिए संसार ।

नरेन्द्र कुमार गाबा, हांसी हिसार
प्र-यदि आपको अपनी सीट से हटा कर, मुझे
बिठा दिया जाय तो आप क्या सोचेंगे ?
उ-बात-बात में टाँग अड़ाएं, दिन भर तुझको कोसेंगे,
सोच रहे जो'चरण-मुरारी' हम भी वह ही सोचेंगे

एम-बी-आलम, जबलपुर
प्र-लड़कियां, बचपन में गुड़ियों से खेलती हैं,
जवानी में शौहर से, तो बुढ़ापे में ?
उ-जैसी जिसकी उम्र है, वैसी उठे उमंग,
बुढ़िया दादी खेलतीं, पोती-पोते संग

प्रेम बाबू शर्मा बगीची पीरजी, दिल्ली
प्र-मजनू और फकीर में क्या अन्तर है काका ?
उ-मजनू लैला के लिए, रहता सदा अधीर,
खुदाबन्द की याद में, है अलमस्त फकीर ।

अन्जु सोनी, रायपुर (म०प्र०)
प्र-मरने के बाद स्वर्ग मिल सकता है ?
उ-भ्रष्टाचारी मरें तो वह स्वर्गीय कहायें,
हाउसफुल है स्वर्ग का, आप नरक में जायें ।

नरिन्द्र कुमार निन्दी, कपूर थला
प्र-मेरा भतीजा बहुत गालियां बकता है, उसका
भविष्य क्या होगा ?
उ-भविष्य उज्वल जानिए, चिन्ता छोड़ो आप,
'गाली भूषण' पद मिले, बने पुलिस का बाप ।

बलबिंदर सिंह छप्पू, क्लाथ हाऊस, शाहजहांपुर
प्र-काकी के लहंगे को कपड़ा भेजना चहता हूँ,
कितना लगेगा ?
उ-लहँगे का घेरा बड़ा, हो जाओ मायूस,
लग जाएगा आपका, पूरा क्लोथ हाऊस ।

मिठाई लाल पानवाला, दिल्ली
प्र-अकलमंद और अकलबंद में क्या फर्क ?
उ-फर्क आप ही समझ लो दोनों में श्रीमान,
नाम मिठाई लाल है, बेच रहे हो पान ।

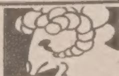
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

पंचतंत्र
शिकार का विकार

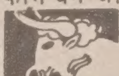


साप्ताहिक भविष्य

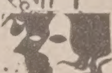
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : संघर्षमय हालात रहेंगे, आय में वृद्धि, नई वस्तुओं की खरीद, परिवार से सुख, यात्रा सावधानी से करें, कारोबार सुधरेगा, बिगड़ा काम बनेगा, परिश्रम द्वारा सफलता, काम बन जाएँगे ।



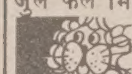
वृष : यात्रा सावधानी से करें, कारोबारी एवं आर्थिक क्षेत्र में सुधार होने लगेगा, आय उत्तम, व्यय यथार्थ, आय में रुकावट, यात्रा न करें, मित्र सहयोग देंगे यात्रा सफल रहेगी ।



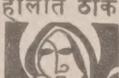
मिथुन : मिश्रित फल मिलेंगे, आर्थिक लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से, दोस्तों से सहयोग, काम बन जाएँगे, संघर्ष काफी आएँगे, व्यर्थ के कामों में समय खराब होगा, व्यापार यथापूर्व, परेशानी व्यर्थ की होगी ।



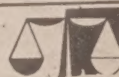
कर्क : घरेलू हालात से चिन्ता, काम काज में सुधार पर आर्थिक लाभ आशा से कम होगा, यात्रा न करें, हालात में सुधार होने लगेगा, बिगड़ा काम बनेगा, कारोबार बढ़ेगा, मिले जुले फल मिलेंगे ।



सिंह : विरोधियों से बचें, हालात अनुकूल होंगे, परिश्रम द्वारा सफलता मिलेगी, कारोबार से लाभ बढ़ेगा, सुस्ती आदि का प्रभाव रहेगा, यात्रा सफल, लाभ खर्च बराबर, हालात ठीक चलेंगे ।



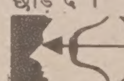
कन्या : आर्थिक चिन्ता रहेगी, संघर्ष काफी रहेगा, जरूरी काम मित्रों की मदद से बन जाएँगे, यात्रा सावधानी से करें, शुभ अशुभ मिश्रित फल मिलेंगे, खर्च बढ़ेगा, अचानक यात्रा, आय यथार्थ, घरेलू व्यय अधिक ।



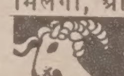
तुला : कामों में सफलता मिलेगी, कारोबारी क्षेत्र में विकास होगा, रुका पैसा मिलेगा, धार्मिक कामों पर खर्च, यात्रा सावधानी से करें, आय में वृद्धि, सेहत नरम, अधूरे काम बनेंगे, लाभ बढ़ेगा ।



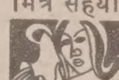
वृश्चिक : आय में रुकावट, व्यय यथार्थ, व्यापार बढ़ेगा, आर्थिक दशा अनुकूल, आय में वृद्धि, कामों में सफलता, परन्तु लाभ कुछ देर से मिलेगा, यात्रा में सुख, परन्तु यात्रा छोड़ दें ।



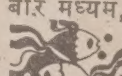
धनु : सेहत नरम, लाभ देर से मिलेगा, घरेलू समस्याओं में परेशानी, दौड़ धूप अधिक सफलता कम, यात्रा आसपास की, अच्छे बुरे मिलेजुले फल मिलेंगे, व्यापार में सुधार, लाभ मिलेगा, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी ।



मकर : आय यथार्थ, घरेलू परेशानी रहेगी, मशीनरी आदि से परेशानी, आय में वृद्धि, शत्रु से बचें, यात्रा सफल, परिश्रम अधिक, आर्थिक लाभ आशा से कम, कारोबार बढ़ेगा, मित्र सहयोग से काम बनते जायेंगे ।



कुम्भ : अफसरों से परेशानी, हालात सुधरेंगे, विरोधी मुंह की खायेंगे, रुका पैसा मिलेगा, घरेलू चिन्ता रहेगी, काम काज में उन्नति, आर्थिक दशा अनुकूल, आय में वृद्धि, कारोबार मध्यम, सेहत नरम ।



मीन : आय यथार्थ, व्यय बढ़ेगा, परिश्रम सफल, यात्रा सावधानी से करें, काम बन जायेंगे, कारोबार से यथार्थ लाभ, संघर्ष काफी रहेगा, यात्रा सफल, शत्रु से बचें, रुके काम बन जायेंगे, गढ़े आदि से दूर ही रहें ।

'यूरेनियम मैं और वो'

(कृष्ण शंकर भटनागर)

अजीब-सी उलझन में फंस कर रह गया हूं। जब से सरकार ने हमारे नगर में यूरेनियम निकलने के समाचार का प्रकाशन करवाया, हमारी नाक में दम आ गया है। इतने वर्षों से चुप बैठे यूरेनियम को, न जाने क्या सूझी, कि झट समाचार पत्रों की सुर्खियों में छा गया। वह भी मोटे अक्षरों में—मुखपृष्ठों पर…!

समाचार का छपना था—मेरे यहां आने वाले मेहमानों का तांता लग गया… किसी धारावाहिक उपन्यास की किस्त के समान ही प्रत्येक सप्ताह मेहमान आ टपकते छः केले हाथों में दबाये, पूरे छः बच्चों और एक अदद बच्चों की मम्मी के साथ आ टपकता है, कोई—न—कोई…! हमारी जान की रोण, इनमें खून के रिश्ते से जुड़े कम और उनके पड़ोसी ज्यादा होते हैं…

एक सज्जन खबर छपने के फौरन बहत्तर घंटे बाद आ धमके—पूरे तामझाम के साथ! 'मैं फलां जगह से तुम्हारे 'फलां' साले के साढू का मौसा हूं…!' उन्होंने परिचय दिया, गणित में कमजोर होने के कारण मैं 'उनसे भली प्रकार रिश्ता भी न जोड़ पाया था, कि डायरेक्ट जासूसी नावलों के जेम्स बांडनुमा फुसफुसाहट भरी आवाज में अपना मन्तव्य हमारे कानों में झोंक दिया, 'यार…जरा वह यूरेनियम तो दिखाओ, जो यहां निकला है…'

मैं चौंका। यूरेनियम ऐसे देखने को मांग रहे थे। गोया कोई होम्योपैथिक दवा हो कि ड्रम का कार्क खोला और पांच-सात गेन्युल्स उनके हाथ पर टिका दिये। मुझे सशोपंज में पड़े देख, वे मुस्कराये। बोले, 'देखो भाई, हमें लेना—देना कुछ नहीं है तुम्हारी मर्जी के बिना, पर दिखला तो दो, भले ही दूर से…'

मैं मन-ही-मन, भुनभुनाया—यूरेनियम न हुआ कि कोई पटबीजना हो गया कि दूर से ही किसी कपड़े में बन्द किया, लाईट बुझाई और दिखला दिया। मैंने उनसे असमर्थता प्रकट की, वे नहीं माने। पूरी रात्रि ठहरे, मेरा मगज चाटते रहे। स्पेशल डिनर लिया, चलते-चलते आश्वासन लिया कि जैसे ही मुझे यूरेनियम का पता लगेगा उन्हें फौरन सूचित करूंगा। एक अदद पता लिखा पोस्टकार्ड थमाकर और भगवान को साक्षी मान कसम खिलवाने के पश्चात उनका प्रस्थान हुआ…!

उनके जाने के पश्चात, सोचा था कि बरसात खत्म हो गयी—ओलों की, पर यह मात्र एक भ्रान्ति थी! इस बार मेरी पत्नी की ननद के देवर के साले के फूफा ओला बनकर मुंडे सिर पर आकर बरसे थे। गनीमत यह थी कि वह अपने साथ पांच नग सेब के लाये थे और अकेले थे…पेशे से वैद्य,



राजी-खुशी पूछी, आने का कारण पूछा, 'तुम तो भई घर के आदमी निकले···सोर्स-वोर्स भिड़वा कर कुछ यूरेनियम दिलवा दो···' बोले थे, वे। यूरेनियम दिलवा दूं···' मैं चौंका। सोचा, यहां घरवाली को आज तक यही शिकायत रही कि मैं सोर्स भिड़ाकर कभी किलो-दो किलो चीनी या चार-छः लीटर तेल न ला सका, और वे सज्जन थे कि आल इण्डिया रेडियो से प्रसारित फर्माइशी प्रोग्राम में अपनी फर्माईश पूरी करवाने जैसा सुगम कार्य समझ कर मेरे यहां आ गये थे—यूरेनियम लेने··· ।

'वो तो ठीक है, साहब···पर यह यूरेनियम है क्या बला? मेरे मुंह से यह अप्रत्याशित उत्तर सुनकर, उनके दिल को ठेस लगी हो जैसे बोले, 'क्या आप वाकई नहीं जानते यूरेनियम के विषय में···'

'जी नहीं···'मैंने निहायत ही मासूमियत भरे, भारतभूषण अन्दाज में सिर हिलाकर मना कर दिया था। मेरा सौभाग्य ही था, उन्हें सहसा ही यकीन हो गया था, फौरन ही अपना झोला और पांचों सेब वाला लिफाफा अन्दर से लाने को कहा, मैं भागकर अन्दर गया, देखा एक अदद सेब में से आधा सेब मेरा बेटा खर्च कर चुका था। आधे खर्च किये सेब को भुलाकर बाकी पचास प्रतिशत बचे भाग को उससे छीना और उसको सबसे नीचे रखने के उपरान्त बाकी चारों सेब उस पर चिन दिये, बाहर आकर लिफाफा और झोला साहब को थमा दिया···उन्होंने बड़े सलीके से अगुंलियों से टटोलकर सेबों की गिनती पूरी की और चल दिये···!

चलो जान छूटी! पर आजकल जान भी इतने सस्ते में छूट जाय, तो वह जान कैसी? एक दिन पौने-तीन बजे ही श्रीमती जी का फोन पहुंच गया-ज्ञात हुआ, कोई और मेहरबान कोलम्बस की तरह तलाशते-तलाशते अपने स्कूटर पर आ धमके हैं···

छुट्टी लेकर घर पहुंचा, साहब···मेरे दोस्त के दोस्त निकले। तपाक से हाथ मिलाया, आने का कारण बताया, वे भूगर्भ शास्त्री थे और स्थान का निरीक्षण करना चाहते थे, जहाँ यूरेनियम निकलने की सूचना थी। सही बात तो यह थी, हमें उस स्थान का स्वयं ही पता नहीं था। उन्हें चाय-पानी कराया, भोजन करवाया, पूरी रात बातों में बिता दी, अगले दिन आफिस में 'एप्लीकेशन' ठुकवा दी-सो अलग।

आभारी रहूंगा—जनाव सिर्फ एक बार ले चलिए···"मैंने लाख समझाया, 'साहब आपने गलत नम्बर डायल किया है। माने ही नहीं, मरता क्या न करता···? उन्हें साथ लेकर इधर-उधर घूमने लगा, कोई जगह पता होती तो बताता भी···आज तक घर में पलरहे मोटे-मोटे चूहों के बिल का तो पता लगा न पाया कभी, यूरेनियम के बिल का पता कैसे लगता···? पर जान तो छुड़ानी थी ही।

एक स्थान पर बड़ा सा गड्ढा खुदा दिखाई पड़ा। मैंने कहा, 'यही जगह है, भाई साहब! यहीं पर काम चल रहा है···' वे सज्जन फौरन गड्ढे में कूद पड़े और वहां की मिट्टी निकालने में लग गए···जेब से एक लेंस निकालकर कुछ टटोलने लगे। वे गड्ढे में से मिट्टी बटोरने में लगे थे, उधर खुदाई करने वाले मजदूर आ गए। मैंने मजदूरों को दो का नोट थमाया और चुप रहने को या हाँ-में-हां करते रहने को कहा, साहब ने मिट्टी इकट्ठी की, और रास्ते से ही रुखसत हो गए।

हम घर पर लौटे, धर्मपत्नी को बिस्तर बांधते पाया, उसने मायके जाने का निर्णय ले लिया था, मैंने भी सोचा, अच्छा है, मैं भी सुसराल चला जाता हूं—कमअज-कम यूरेनियम प्रेमियों से कुछ दिन तो छुटकारा मिलेगा। ●

मोटू पतलू

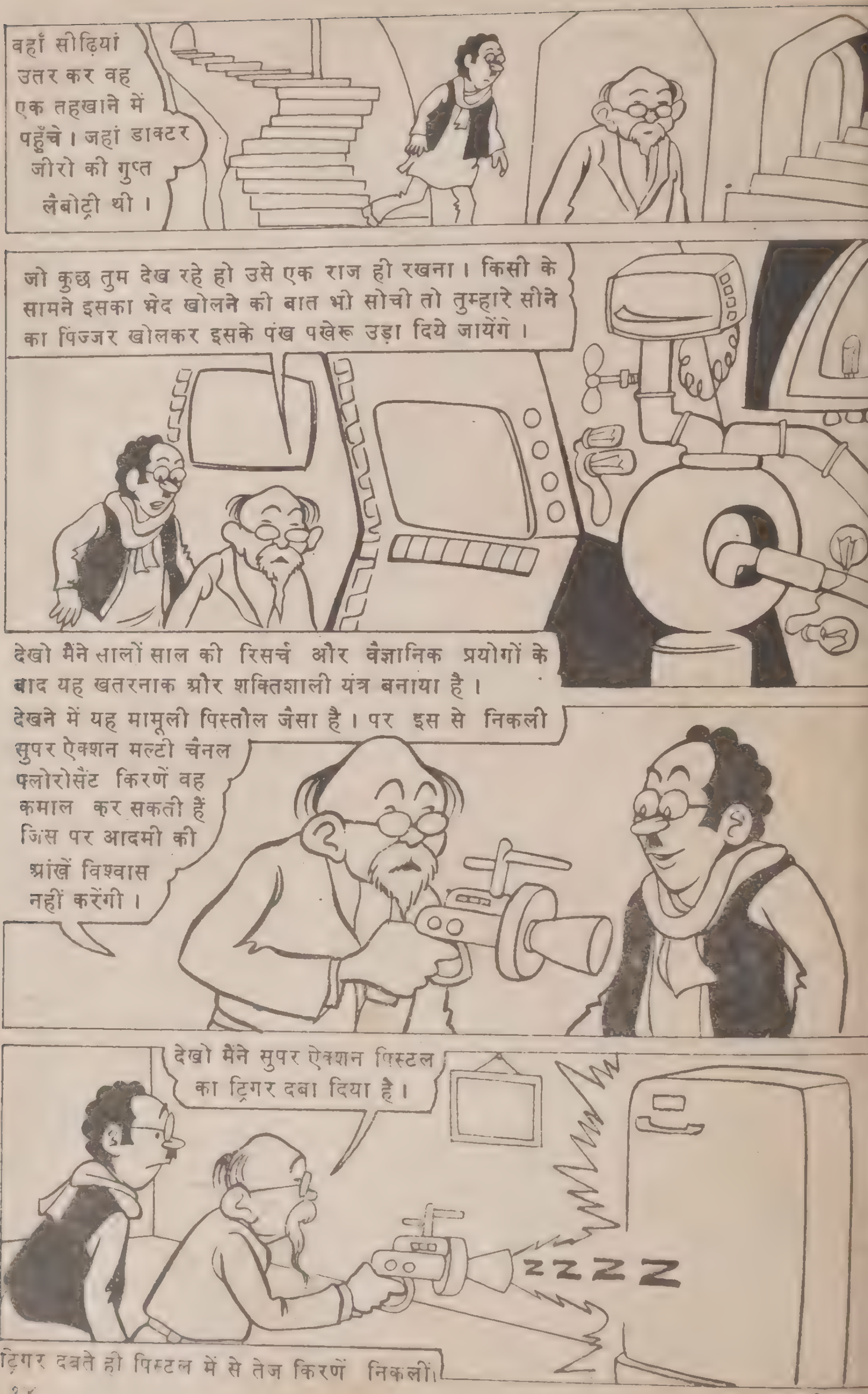
एक दिन मोटू-पतलू अपने सभी मित्रों के साथ बैठे समाज सुधार और लोक कल्याण के नये-नये मंसूबे बना रहे थे। घसीटा राम सोफे पर पड़ा ऊंघ रहा था और अकलमन्द उल्लू पास बैठा गाना गा रहा था···





हाँ, यह सब चोर ही तो हैं, जब भी सफलता मेरे कदम चूमने लगती है, यह मेरी टांग खींच कर अपना पांव आगे कर देते हैं। मौका मिला तो मैं इन सब का बेड़ा गर्क कर दूँगा।
लगता है बाहर कोई मेरा इन्तजार कर रहा है। कोई मुझे बुला रहा है। लगता है जैसे मैं आप से आप किसी की ओर खिचा जा रहा हूँ। चलकर देखूं कौन है ?
बाहर सड़क पर वास्तव में कोई घसीटा राम का इन्तजार कर रहा था और वह उस अजीब आदमी की ओर खिचा जा रहा था।
इससे पहले कि तुम मुझ से कुछ पूछो, मैं तुम्हें बता दूं कि मैंने अपनी विलपावर से तुम्हें यहाँ बुलाया है। मुझे तुम जैसे बदमाश आदमी की सख्त जरूरत है।
मैं बदमाश हूँ ? तुमने कैसे जाना ?
मुझ में दूसरे का दिमाग पढ़ने की शक्ति है।
मैंने इसके एक झापड़ रसीद कर दिया तो यह सारी शराफत भूल जाएगा।
देखो, तुम इस समय सोच रहे हो, तुमने मेरे एक झापड़ रसीद कर दिया तो मैं सारी शराफत भूल जाऊँगा।


अरे वाह, तुम कोई जादूगर हो क्या ?
यह जादू मेरे हाथ आ जाए तो मैं सारी दुनिया का सत्यानाश करके करोड़ों रुपया बटोर लूँ ।
देखो, तुम इस समय सोच रहे हो, यह जादू मेरे हाथ आ जाए तो मैं सारी दुनिया का सत्यानाश करके लाखों रुपया बटोर लूं ।
मान गये गुरू । वास्तव में यही सोच रहा था, मुझे चेला बना लो अपना, तुम्हारा नाम क्या है ?
डाक्टर जीरो ।
डाक्टर जीरो ! यानी गोल अंडा !! यानी शून्य !! दूसरों का दिमाग पढ़ने की कला मुझे कितने दिनों में आ जायेगी डाक्टर जीरो ?
फिर मैं इस डाक्टर का भी सफाया कर दूँगा ।
जल्दी ही आ जाएगी
यह क्या बकवास सोच रहे हो ? मुझ से सीखे गुर से मेरा ही सफाया करोगे ?
बेड़ा गर्क हो, मुझे यह ख्याल ही नहीं रहा कि तुम में दूसरों का दिमाग पढ़ने की शक्ति है ।
कोई बात नहीं । हम खुश हुए तुम से । मुझे ऐसे ही बदमाश आदमी की जरूरत है, जो जिस थाली में खाये उसी में छेद कर सकता हो ।
मेरे साथ चले आओ ।
डाक्टर जीरो के साथ घसीटा राम एक सुनसान जगह पर पहुँचा जहां पुराने जमाने के टूटे-फूटे खंडहर थे ।



वहाँ सीढ़ियां उतर कर वह एक तहखाने में पहुँचे। जहां डाक्टर जीरो की गुप्त लैबोट्री थी।
जो कुछ तुम देख रहे हो उसे एक राज ही रखना। किसी के सामने इसका भेद खोलने की बात भी सोची तो तुम्हारे सीने का पिंज्जर खोलकर इसके पंख पखेरू उड़ा दिये जायेंगे।
देखो मैंने सालों साल की रिसर्च और वैज्ञानिक प्रयोगों के बाद यह खतरनाक और शक्तिशाली यंत्र बनाया है।
देखने में यह मामूली पिस्तौल जैसा है। पर इस से निकली सुपर ऐक्शन मल्टी चैनल फ्लोरोसैंट किरणें वह कमाल कर सकती हैं जिस पर आदमी की आंखें विश्वास नहीं करेंगी।
देखो मैंने सुपर ऐक्शन पिस्टल का ट्रिगर दबा दिया है।
ZZZZ
ट्रिगर दबते ही पिस्टल में से तेज किरणें निकलीं।


श्रौर दूसरे ही पल घसीटाराम ने देखा, जिस बड़े रैफ्रीजियेटर पर वह किरणें पड़ीं थीं वह माचिस की डिबिया जितना छोटा हो गया था।
वाह वाह, यह शक्तिशाली यंत्र है या जादू का पिटारा? पलक झपकते ही इतनी बड़ी चीज को इतना छोटा कर दिया।
फिर देखो।
कमाल हो गया। इतनी बड़ी चीज को 'कम्पोज' करके इतना छोटा बना दिया। इस यंत्र से तो तुम वास्तव में सारी दुनिया को मुर्गी का अंडा बना सकते हो।
अब मेरा प्लान सुनो, जिसके लिए मुझे तुम जैसे बदमाश की जरूरत थी।
हाँ, जल्दी कहो, मुझ से बड़ा बदमाश तुम्हें दुनिया में नहीं मिल सकता। मुझे बीस साल का तजुर्बा है बदमाशी का।
इस यंत्र को लेकर तुम जगह-जगह जाश्रोगे। दुकानों में, बड़े बड़े स्टोरों में, नुमाइशों में, होटलों में और वहां की बहुमूल्य बड़ी-बड़ी चीजों को छांट कर श्रपनी जेब में चुरा लोगे श्रौर यहां ले श्राश्रोगे।
जैसे मैंने श्रभी एक रैफ्रीजियेटर को छोटा किया, तुम किसी स्टोर में जाकर ऐसे ही उसे छोटा करोगे और चुरा कर यहां ले श्राश्रोगे। इसके बाद हम क्या करेंगे श्रौर किस प्रकार हम वहाँ दौलत के श्रम्बार जमा करेंगे, यह मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा।


तुम क्या बताओगे। आगे की सब बातें आप से आप आ रही हैं मेरी औंधी खोपड़ी में। एक बात बताओ डाक्टर जीरो, इस यंत्र की किरणों के आगे जो भी हो वह छोटा हो जायेगा।
हाँ छोटा हो जाएगा।
मैं इसे किसी और प्रकार आजमाना चाहता हूँ। एक बात मानोगे मेरी?
मैं समझ रहा हूँ तुम्हारे दिमाग में क्या बात आई है, मुझे वास्तव में तुम जैसे आदमी की जरूरत है। इसलिए तुम्हारी बात मान लेता हूं। चलो, मैं तुम्हारे साथ हूं।
डाक्टर जीरो को लेकर घसीटाराम मोटू-पतलू के दरवाजे पर आ गया।
पास आकर घसीटाराम ने अपने यंत्र की किरणें चेलाराम पर छोड़ दीं।
अरे यह क्या मुसीबत है?
और देखते ही देखते चेलाराम खिलौने की गुड़िया जितना छोटा हो गया।
यह क्या हो गया मुझे। मैं सिकुड़ कर इतना छोटा कैसे हो गया।
बचाओ...!
बचाओ...!!



उसकी सहायता के लिए मोटू-पतलू दौड़े-दौड़े आए। तो घसीटा राम ने उन पर भी यंत्र की किरणें छोड़ दीं।
क्या कर रहा है घसीटा राम ? हमें आग में भून डालेगा क्या ?
पल भर में घसीटा राम ने सब को रबड़ की गुड़िया जितना छोटा बना दिया था। बेबस खिलौनों की तरह अब वे डाक्टर जीरो और घसीटाराम के कब्जे में थे।
अब सुनाओ मुर्गी के चूजो ! क्या हाल चाल हैं तुम्हारे ?
इस बीच अंगूठा नन्द बड़ी चतुराई से घसीटा राम पर चढ़ता हुआ
उसकी जैकेट के नीचे जा छुपा था।



आगामी अंक में घसीटाराम की अगली अडंगेबाजियां अवश्य देखिये।



प्रोफेसर गुटका का एक
शुभ दिन
मैं बड़ी मानसिक अशान्ति में फँसा रहता हूं प्रोफेसर साहब
कई बार मुझे ऐसा लगता है जैसे मेरे सर पर ई भारी चीज़ आ गिरेगी ।
कई बार ऐसा लगता है जैसे मैं गड्ढे में जा गिरूंगा ।
ड़ी से टकरा जाऊंगा ।


या छत से फिसल जाऊंगा ।
यह सब विश्वास खो देने वाली बातें हैं। तुम्हें अपना कौनफिडेंस बनाये रखना चाहिये और यह विश्वास कर लेना चाहिए कि तुम पर कोई मुसीबत आ ही नहीं सकती ।
जैसे मैं सदा यह विश्वास किए रहता हूं ।
आप ने तो मुझे नया जीवन दे दिया प्रोफेसर साहब
मुझमें बड़ा कॉन्फीडेंस आ गया है । थैंक्यू वैरी मच ।
मैंशन नॉट ।

तीन जासूस और



का रहस्य

भाग-६

पछताने का कोई लाभ न था। सधे हुये हाथ उनकी मुश्कें बांध रहे थे। हाथ बंधने के बाद उन्हें नीचे बैठने का आदेश मिला। बैठने पर उनकी टांगें भी अच्छी तरह बांध दी गयीं। अब वे चार गठरियां से लग रहे थे। बांधने के बाद भीमा व बदलू ने उन्हें दायीं ओर वाले कोने में आलू की बोरियों की तरह रखा।

सुलेमान उन पर टार्च की रोशनी फेंकता हुआ घुर्राया, 'हम तुम्हारे मुंहों में कपड़ा नहीं ठूसेंगे क्योंकि सारी बस्ती खाली हो चुकी है, यहां तुम्हारी चीख सुनने वाला बचा ही कौन है? बेकार गला खराब न करना।'

वह फिर हो हो कर हँसने लगा!

अब राजू और उसके साथी ठीक तरह देख पा रहे थे। सुलेमान मोटा ताजा और लम्बा व्यक्ति था। भीमा ठिगने कद, चेहरे पर चेचक के दागों वाला और बदलू पतला था लेकिन कांईयां लगता था।

'अच्छा तो अब बात क्या बनी?' सुलेमान ने खुरदरी आवाज में टार्च की रोशनी उस जगह हिलाते हुये जहां राजू ने कैलेन्डर उधेड़ने की कोशिश की थी। कहने लगा कैलेन्डर के नीचे तीस हजार रुपये के नोटों की तलाश थी! क्यों? नोट छुपाने के लिये वाकई बहुत उपयुक्त जगह है। नटवर लाल क्या इन तीनों छोकरों ने यह सुराग लगाया?'

'हां, नटवर लाल ने स्वीकार किया, भेद सारा जग्गी द्वारा अलीबाबा के लिये पत्र में था और पत्र कब्र से सन्दूक में पड़ा था।'

'हमारा भी यही ख्याल था।' सुलेमान बोला, 'तभी तो हमने सन्दूक उड़ाने की कोशिश की थी, हमारे हाथ लग भी गया था उस जादूगर कोका की कार में टक्कर मार कर, हमने उस पर कब्जा भी कर लिया था। लेकिन अड्डे पर पहुंचने से पहले ही कुछ लोगों ने मेरे आदमियों पर हमला कर उसे छीन लिया था! हम सन्दूक खोलने नहीं पाये। नटवर वह तुम्हारा ही काम था?'

'वह मैं नहीं था भाई?' नटवर ने रस्सियों की जकड़ में कसम खाते हुये कहा?

'कमाल है!' सुलेमान बुदबुदाया, 'कौन थे वह फिर? यह छोकरे तो हो नहीं सकते।'

इस बार भीमा बोला, 'वह पांच जने थे। उन्होंने मुंह पर रुमाल बांध रखे थे। बहुत तेज आदमी थे। इस तेजी से झपटे की जब तक हम कुछ सोच पाते वह हमें दबोच चुके थे।'

'कौन हो सकते हैं? 'सुलेमान ने दांत पीसा, शायद कोई और गिरोह भी पीछे पड़ा है। चलो कुछ भी हो सन्दूक उड़ाने का उन्हें कोई लाभ नहीं पहुंचा वर्ना हमसे पहले

दीवाना

यहां पहुंच चुके होते। खैर छोड़ो। हमें यहां खड़े बातें थोड़े करनी हैं। भीमा और बदलू कैलेन्डर उखाड़ने शुरू करो।'

कोठे में बंधे चार गठरियों से लगते बंदी उन्हें कैलेंडर उखाड़ते देखते रहे।

तीनों आधी दीवार के कैलेंडर उतार चुके लेकिन नोटों का नाम निशान न मिला। सुलेमान बुदबुदाहट के स्वर में गालियां निकाल रहा था। जब वह कोने से दूर पहुंचने लगे तो सुलेमान ने बदलू को बंदियों की निगरानी के लिये दरवाजे के साथ खड़ा किया और खुद भीमा के साथ कलेंडर उखाड़ने में लग गया। पूरी दीवार के कलेंडर उतर गये, कुछ हाथ न लगा।

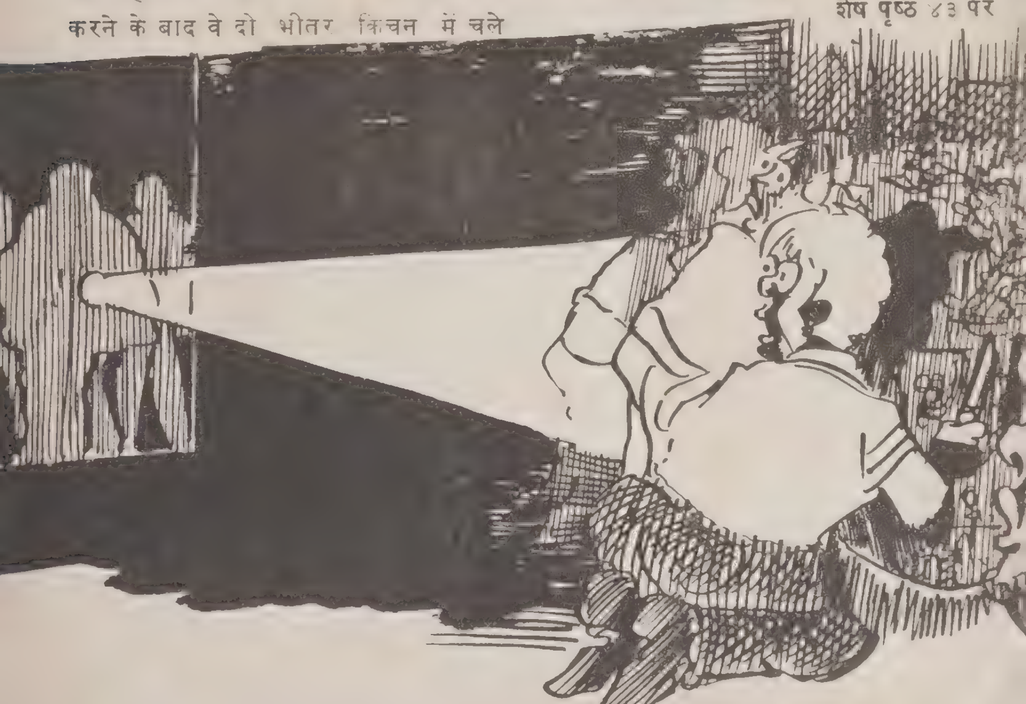
गुस्से में बड़बड़ाते हुये दोनों बायीं दीवार पर उधेड़ने का काम करने लगे। बायीं दीवार भी पूरी नगी हो गयी, फर्श पर फटे कैलेंडर का ढेर लग गया। सुलेमान के स्वर की झल्लाहट से प्रतीत होता था कि पैसे नहीं मिले। सामने वाली दीवार नंगी करने के बाद वे दो भीतर किचन में चले गये वहां भी दीवारों पर कुछ कैलेंडर लगे थे।

अचानक दरवाजे से अन्दर एक छाया आयी और बदलू को इस सफाई से मुंह से पकड़ा कि वह चेतावनी की चीख भी न मार सका। एक ओर चोट सिर पर और बदलू फर्श पर ढेर हो गया। आगन्तुक ने उसे घसीट कर दूसरे कोने में रखा। और वह व्यक्ति चारों बंदियों के पास आया और फुसफुसा कर बोला, श ssss ! चुप ! हम तुम्हारी मदद को आये हैं।

इसके पश्चात् दरवाजे पर जाकर उसने बाहर इशारा किया ! साथ ही एक के बाद एक लगभग एक दर्जन व्यवित दबे पाँव अंदर घुस आये और दूसरे कोने में चुपचाप जाकर खड़े हो गये !

राजू के मस्तिष्क में विचार तेजी से घूमने लगे। क्या ये वास्तव में हमदर्द हैं या कोई और गिरोह बदमाशों का। पुलिस तो हो नहीं सकती, क्योंकि वे होते तो धड़ल्ले

शेष पृष्ठ ४३ पर



जूड़ा बड़ा गूढ़


विदेशों में यह थ्योरी चल पड़ी है कि स्त्रियों के लिए भारतीय ढंग का बालों का विन्यास जूड़ा बेकार की चीज है। न इसमें कल्पना शक्ति है और न उपयोगिता, सिर पर बेकार का बोझ है। हमारी रिसर्च कुछ और बताती है, जूड़े में बड़े गूढ़े गुण हैं। हां···
कच्चे आम को जूड़े में रखिये। शाम को जूड़ा खोलने पर (गर्मी के कारण) आपको आम पका मिलेगा। आम के आम और जूड़े का काम।
पार्क वगैरहा में आपको लेटने की मस्ती हो तो जूड़ा सिरहाने का काम बखूबी दे सकता है।
BEEP
BEEP
भारतीय युवतियां जासूसी सेवा में भर्ती हों तो जूड़ा गुप्त ट्रांसमीटर छिपाने के लिए अनोखी जगह है।
INDIA


लड़का दार्शनिक हो तो क्या कहने ? मां को तंग नहीं करेगा । हर समय इसी उधेड़ बुन में लगा रहेगा कि इस जूड़े में है क्या ?
जूड़ा बांधते समय जूड़े में एक हुक … या जाये तो हल्की फुल्की चीजें लटकाने का काम लिया जा सकता है । चलता फिरता हैंगर समझ लीजिये ।
झंडा दिवस
झंडी व बैज वगैरहा लगाने के लिए जूड़े से ज्यादा उपयुक्त जगह ग्रौर कौन-सी हो सकती है ?
BUS
पति बस में रहेगा । जहां भी भीड़ भड़क्का होगा बीवी का जूड़ा पीछे खड़े पति की नाक में जरूर लगेगा । एक सफर बस का पति के नाक में ऐसे रगड़े लगायेगा जैसे उसने नाक से जमीन पर २१ लकीरें खींची हों ।



आदमयुग
डैडी मैंने आपसे कितनी बार कहा परेशान हैं। हम बाहर जाती हैं सिरों पर बीट कर देते हैं।एक तो हो जाता है,दूसरे ट्रैनाउन काल ही दो किलो से कम की नहीं उलझ जाते हैं तो छुड़ाते लड़कियां तो झाड़ियों में रस उन्हें खा गये। पे
रो। हम बहुत बड़े पक्षी हमारे मेक अप खराब क्षियों की बीट बाल झाड़ियों में जाती है।कई और टेटरासो हैं तो सर फटने
ने पर (गर्मी के जूड़े का काम।
अब तुम्हारे दुःखों का अन्त हो गया समझो।
यह देखो,मैं क्या लाया हूं? यह डिमपला टोरस का अंडा है। यही तुम्हारी हमारी समस्याओं का हल है।जंगल के वैज्ञानिकों ने ऐसा ही कहा है।
इससे शायद शैम्पू बनाया जायेगा जिससे सिर धोयेंगी?
। मैं अब इस अंडे को तोड़ने में बहुत सावधानी बरस पर साइन्स दानों ने फार्मूला निकाला है,ठीक उसी तरह इसको तोड़ना होगा। थोड़ी सी असावधानी से बना बनाया खेल बिगड़ सकता है। तुम जरा पीछे हट जाओ।
अच्छा
ओह डैडी। यह तो सचमुच ही वैज्ञानिकों ने क्रांतिकारी फार्मूला खोज निकाला है।अब मानव जाति को जंगल में कोई नहीं हरा सकेगा। इसका क्या नाम रखा है वैज्ञानिकों ने?
कमाल है
ऐसे
इसका नाम हैलमैट है। अब तो सुना है कि जंगली सरकार सब जंगलियों के लिये पहनना अनिवार्य करने वाली है। जो वगैर हैलमैट पहने अपनी गुफा से बाहर निकलेगा उसका चालान किया जायेगा। कहते हैं कि फाइबर ग्लासोरस के अंडे का हैलमैट तो और भी मजबूत होता है और हल्का।

दीवाने कार्ड को मोड़कर देखिये





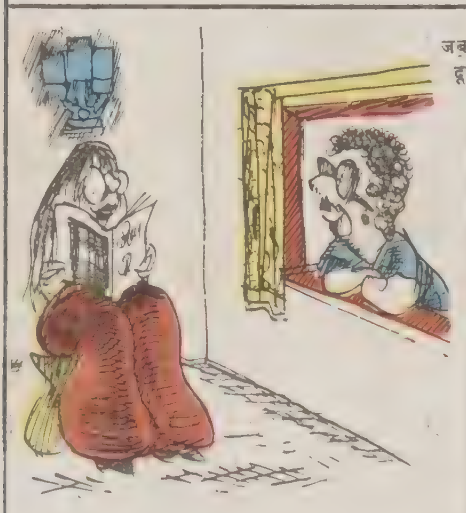


हमारे देश में लोग इम्पोर्टेड चीजों के दीवाने हैं, इम्पोर्टेड कार, टी॰वी॰, घड़ियां, शराब, कम्प्यूटर, साड़ियां, टू इन वन, केल्कुलेटर, शेवर रिकार्ड चेन्जर , प्लेयर, भाषा, कपड़े आदि तो थे ही, अब एक नयी चीज इम्पोर्ट करने का पागलपन हम पर सवार हो गया है। बगैर इसे इम्पोर्ट किये ही काम चला सकते थे वह चीज़ क्या है ? यह जानने के लिये पृष्ठ मोड़कर देखें···

आपको पता लगता है दीवाना का साइज मोटा व छोटा हो गया है जब...



जब आपको अपना चेहरा मुख पृष्ठ पर छपे चिल्ली के चेहरे से बड़ा नजर आता है।



जब पढ़ते समय दीवाना आपका पूरा चेहरा नहीं छुपाता । दूसरों को भी आपके दर्शन का साथ-साथ मौका देता है।



जब दीवाना मोटा होने की वजह से एक ही बार में मच्छर मार देता है। पुरानी साइज का दीवाना मच्छरों को केवल अधमरा कर पाता था।



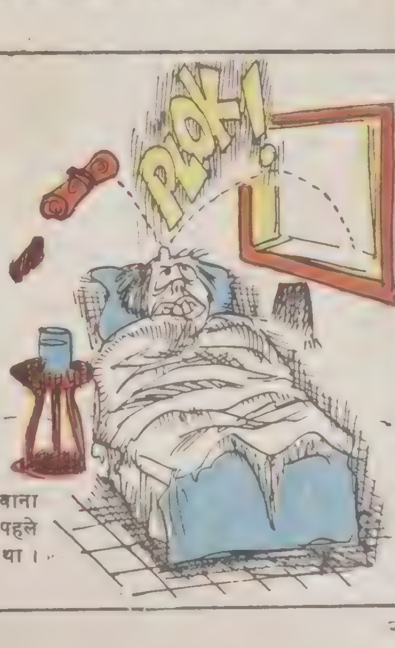
जब दीवाना के पेजों से बने लिफाफों में आपको पकोड़े या जलेबी नहीं मिलेगी। साइज छोटा होने के कारण दीवाना के लिफाफे में ५० ग्राम मूंगफली ही आयेंगी।



अब आपका कुत्ता आप से नाराज नहीं होयेगा। नया छोटा दीवाना आप एक ही हाथ से पकड़ कर पढ़ सकते हैं। दूसरे हाथ से कुत्ते को सहला कर उसे जौली मूढ़ में रखा जा सकेगा।



जब दीवाना के लिए छीना झपटी होगी और मोटा व छोटा होने के कारण फटने के लिए अधिक हॉर्सपावर का जोर मांगेगा। हो सकता है दोनों तरफ रस्सा कसी की पूरी टीम लगानी पड़े।



जब अखबार वाला आप के माथे को निशाना बना कर दीवाना फेंकेगा तो छोटा व मोटा दीवाना बेलन की तरह लगेगा। पहले वाला दीवाना जब हल्का पड़ता था जिसमें मजा नहीं आता था।

कुछ आंकड़े क्रिकेट के

मेरा पहला दोहरा शतक

इसी वर्ष मार्च में जब लाहौर में तसलीम आरिफ ने आस्ट्रेलिया के विरुद्ध २१० रन बनाए तो वे विश्व टैस्ट क्रिकेट के बीसवें ऐसे खिलाड़ी बने, जिन्होंने अपने टैस्ट जीवन का पहला शतक दोहरे शतक के रूप में लगाया। इसी विषय की और कुछ रोचक बातें—



१. सिम्पसन और गैरी सोबर्स ही ऐसे टैस्ट खिलाड़ी हैं जिन्होंने अपने टैस्ट जीवन का प्रथम शतक तिहरे शतक के रूप में बनाया।

२. वाल्टर हेमन्ड, कन्हाई व जहीर अब्बास ही ऐसे टैस्ट खिलाड़ी हैं जिन्होंनें पहले दोहरे शतक के बाद दूसरा शतक भी दोहरे शतक के रूप में बनाया।

३. फोस्टर, लायड, एटकिंसन व डोनेल्ली ने प्रथम शतक दोहरा शतक बनाने के बाद टैस्ट जीवन भर दोबारा शतक नहीं बनाया।

४. फोस्टर तथा लारेंस रो ने अपने जीवन के पहले ही टैस्ट में दोहरा शतक बनाया।



प्रथम शतक दोहरा बनाने वाले बीस खिलाड़ी

आस्ट्रेलिया—

एस. ग्रेगरी	२०१ विरुद्ध इंगलैंड	१८९४-९५
एस.जी. बार्न्स	२३४ ,,	१९४६-४७
आर. बी. सिम्पसन	३११ ,,	१९६४

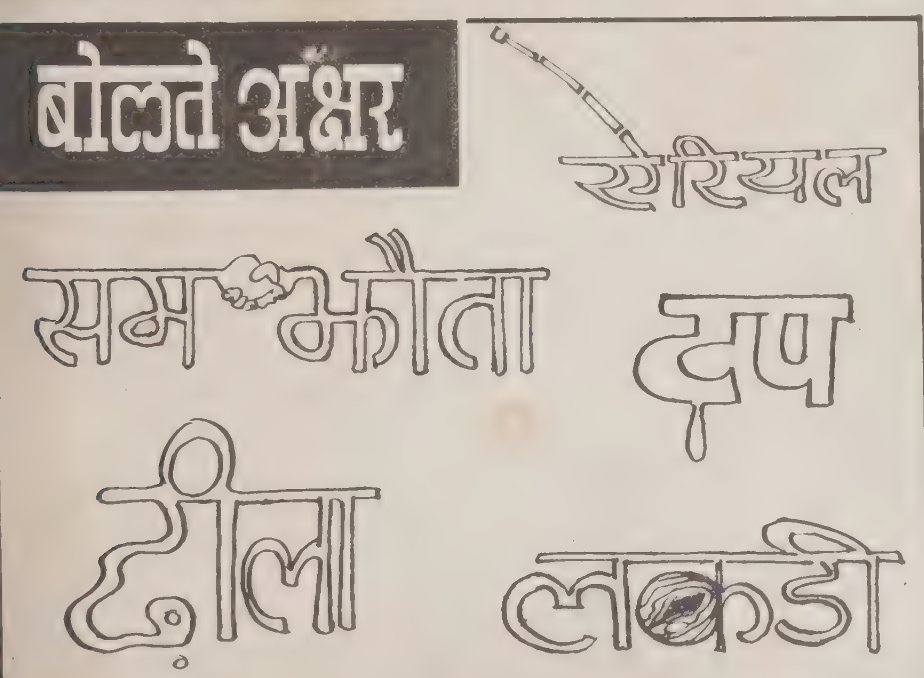
इंगलैंड—

आर फोस्टर	२८७ विरुद्ध आस्ट्रेलिया	१९०३-०४
डब्ल्यू. हेमंड	२५१ ,,	१९२८-२९
ई. पेन्टर	२१६ ,,	१९३८
जोहन एडरिच	२१९ द.अफ्रीका	१९३८-३९
डी लॉयड	२१४ विरुद्ध भारत	१९७४



द० अफ्रीका—			
ए. डी.नोर्स	२३१	आस्ट्रेलिया	१९३५-३६
डी. जे. मैक्ग्लीयू	२५५	न्यूजीलैंड	१९५२-५३
न्यूजीलैंड—			
एम. पी. डोनेल्ली	२०६	इंगलैंड	१९४९
वेस्ट इंडीज—			
डी. एटकिंसन	२१९	आस्ट्रेलिया	१९५४-५५
जी.एस. सोबर्स	३६५	पाक	१९५७-५८
आर. बी. कन्हाई	२५६	भारत	१९५८-५९
एस. एम. नर्स	२०१	आस्ट्रेलिया	१९६४-६५
लारेंस रो	२१४	न्यूजीलैंड	१९७१-७२
फाऊद बैक्कस	२५०	भारत	१९७८-७९
पाकिस्तान—			
इम्तियाज अहमद	२०९	न्यूजीलैंड	१९५५-५६
जहीर अब्बास	२७४	इंगलैंड	१९७१
तस्लीम आरिफ	२१०	आस्ट्रेलिया	१९७९-८०
भारत—			
दिलीप सरदेसाई	२००	न्यूजीलैंड	१९६४-६५

बोलते अक्षर





डा॰ झटका का लटका
AUTO WORKS
एक दिन डा॰ झटका की गाड़ी खराब हो गई ।
वह उसे मरम्मत कराने मैकेनिक के पास ले गये ।
गाड़ी जब ठीक हुई तो मैकेनिक का बिल देख कर परेशान हो गये ।
?
इतना बिल किस बात का ?
गाड़ी का यह पार्ट बदला है, इस बात का ।


डाक्टर झटका ने बिल पेमन्ट की ओर चल दिये। मैकेनिक मुंह मांगे रुपये पाकर खुश था।
अचानक मैकेनिक के पेट में जोर का दर्द हुआ।
मैकेनिक अस्पताल पहुंचा, जहां उसके पेट का आपरेशन किया गया।
ठीक होने के बाद उसके पास आपरेशन का बिल आया।
इतना बिल ? किस बात का ?
तुम्हारे जिस्म का यह पार्ट बदला है, इस बात का।

क्यों और कैसे

प्र० : हमारे बाल कैसे बढ़ते हैं तथा इनके भिन्न-भिन्न रंग क्यों होते हैं ?

दिनेश पोद्दार—गंगा नगर

उ० : हमारे बालों की बनावट बहुत ही अनोखी तथा रोचक है। ये त्वचा की शृंगी परत से बनते हैं, जो कि वास्तव में भीतर की ओर बढ़ती है। ये परत बाल की जड़ तक पहुंचने के बाद बाल के रूप में त्वचा के भीतर से बाहर को उगते हैं। बालों में त्वचा की एपीडरमिस परत के समान, जो बाल की जड़ के लिये भूमि तैयार करता है, के समान ही अणु होते हैं। शरीर में पाये जाने वाले दूसरे सभी अणुओं के समान' यह बढ़ते हैं, और बाल के बढ़ने के साथ-साथ ऊपर उठते हैं। ये अणु नष्ट होने पर बाल में एक प्रकार का रंग द्रव्य छोड़ देते हैं। रंजक के ये कण ब्राउन रंग के हर शेड के होते हैं, जो कि लाल से लेकर गाढ़े ब्राउन तक के होते हैं। बालों के शृंगी तत्व का रंग पीला होता है और इन्हीं के कारण मनुष्य के बालों के सुनहरी से लेकर लाल रंग तक के शेड बनते हैं। पूर्वजों से प्राप्त 'जीन्स' बालों के रंग, द्रव्य या रंजक के कण रंग का निर्धारण करती है। और इस कारण बालों के रंग में पूर्वजों से प्राप्त 'जीन्स' का बड़ा हाथ होता है।

औसतन मनुष्य के शरीर की त्वचा पर ३००,००० से ५००,००० तक बाल होते हैं।

प्र० : ईथर अथवा क्लोरोफोर्म इत्यादि निश्चेतक हमारे शरीर पर कैसे प्रभाव करते हैं ? **नवीन कुमार—टीकरी कलां**

उ० : ईथर का प्रयोग निश्चेतक के रुप में किया जाता है, ये हमारे शरीर के तंन्त्रिका तन्त्र (नरवस सिस्टम) पर प्रभाव डालता है जिससे हमें दर्द का अनुभव होना बन्द हो जाता है। कुछ निश्चेतक तन्त्रिकाओं पर ऐसा प्रभाव डालते हैं कि वे दिमाग को दर्द का संदेश नहीं भेज पाती. इसके अतिरिक्त कुछ निश्चेतकों का प्रभाव सीधे दिमाग पर ही पड़ता है। दोनों ही अवस्थाओं में हमें दर्द अनुभव नहीं होता। निश्चेतक दो प्रकार के होते हैं, व्यापक या जनरल तथा सीमित या लोकल। व्यापक निश्चेतक से मनुष्य बेहोश हो जाता है तथा कुछ समय के लिये पूरी चेतना खो बैठता है। दूसरा निश्चेतक जिसे सीमित कहते हैं, केवल शरीर के विशेष भाग पर ही प्रभाव करता है। इसके उपयोग के बाद मनुष्य पूरी तरह चेतन रहता है। केवल शरीर के निश्चेतक किये अंग से ही चेतना जाती है जिसे सुन्न करना कहते हैं और इस विशेष अंग से ही उसे दर्द अनुभव नहीं होता। ईथर व्यापक निश्चेतक है, ये ईथाइल, ईथर या डाईथायल ईथर रसायन होता है। ये रसायन एक सफेद तरल पदार्थ होता है जो बहुत जल्दी गैस में बदल जाता है। इस गैस के शरीर में प्रवेश करते ही, रक्त द्वारा ये मुख्य तंन्त्रिका तंन्त्र में पहुंचा दी जाती है। वहां पहुंच कर इस दवाई का प्रभाव मस्तिष्क के स्नायु अणों पर पड़ता है। और ये अणु संदेश ग्रहण करने तथा भेजने में असमर्थ हो जाते हैं। और रोगी को किसी भी अनुभूति का अनुभव नहीं हो पाता और वो चेतना खो बैठता है।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एक लोकप्रिय जोड़ी जो टूट गई

शत्रुघ्न सिन्हा-रीनाराय

● विजय भारद्वाज

फिल्मों में प्रवेश से लेकर अब तक शत्रुघ्न सिन्हा और रीना राय दोनों ही चर्चा का विषय रहे हैं। रीना राय फिल्म 'जरूरत' के बाद अत्याधिक लोकप्रिय हुई जब कि शत्रुघ्न सिन्हा ने खलनायकों के रूप में भी सफलता अर्जित की और नायक बनकर भी प्रसिद्धि पाई। अपनी इमेज बदलने वाले प्राण, विनोद खन्ना और शत्रुघ्न सिन्हा फिल्म उद्योग में चर्चित रहे हैं। रीनाराय और शत्रु के आपस में रोमांस के कारण यह जोड़ी पर्दे पर तो हिट हुई ही, दर्शक पर्दे के पीछे की बातें भी इन दोनों कलाकारों के बारे में सुनते आये हैं।

रीनाराय और शत्रुघ्न सिन्हा का रोमांस चर्म सीमा तक चलो, लेकिन पिछले कुछ महीनों पूर्व इस रोमांस का अन्त दर्दनाक हुआ। अचानक शत्रुघ्न सिन्हा और रीनाराय के सम्बन्ध खराब हुए और शत्रुघ्न ने अपनी वर्षों पुरानी मंगेतर पूनम चंदीरमानी से विवाह कर लिया।

पूनम वर्षों से बिना विवाह किये शत्रु के फ्लैट 'रामायण' में रह रही थी। वर्षों पूर्व पूनम बम्बई में फिल्मों में काम की तलाश में आई थी। इसका नाम तब कोमल था। इसी नाम से इन्होंने शत्रुघ्न की नायिका के रूप में फिल्म 'सबक' में बतौर हीरोइन अभिनय किया। इसे इत्तफाक ही कहिये कि यह फिल्म भी नहीं चली और कोमल भी फिल्म लाइन में आगे नहीं बढ़ सकी लेकिन कोमल और शत्रुघ्न दोनों एक दूसरे को चाहने लगे। शत्रु की इसी चाहत की वजह से ही कोमल पूनम बनकर शत्रुघ्न के फ्लैट में आ गई और इन्होंने फिल्म दीवाना उद्योग से मुंह मोड़ लिया। इतने वर्षों से चले आ रहे शत्रु-पूनम रोमांस को कई बार उछाला गया और यहाँ तक छापा गया कि शत्रु ने पूनम को रखैल बना रखा है।

शत्रु रीनाराय की मित्रता भी इसी बात का सबूत था कि शत्रु पूनम से विवाह नहीं करेगा। लेकिन यह भ्रम साबित हुआ। वास्तव में हकीकत यह थी कि शत्रु-रीना की जोड़ी पर्दे की हिट जोड़ी साबित हुई। 'कालीचरण', 'विश्वनाथ','चोर हो तो ऐसा', 'हीरा मोती' आदि सभी फिल्में हिट रहीं। इसमें नायक नायिका शत्रु-रीना ही थे। निर्माता-निर्देशकों में इन दोनों की मांगें बढ़ गई थीं। दोनों सैट पर,पार्टियों में व प्राइवेट पार्टियों में एक साथ देखे जाते। शत्रुघ्न व्यवसायिक दृष्टि से रीना को अपनी नायिका समझता था जब कि रीनाराय निकटता का अर्थ 'प्रेम' समझ बैठी और धोखा खा बैठी। शत्रु और पूनम के विवाह से रीनाराय को निराशा हुई और दिल को ठेस पहुंची। फिल्म 'आशा' का गीत रीना पर खरा उतरा नजर आया, 'शीशा हो या दिल आखिर टूट जाता है।'

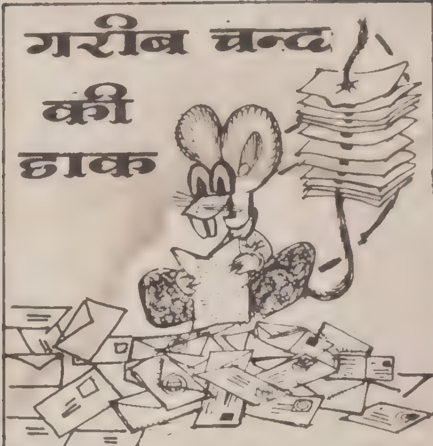
भविष्य में भी शायद रीनाराय शत्रुघ्न के साथ कोई फिल्म स्वीकार न करे। क्योंकि हाल ही में निर्माता राजकुमार कोहली रीनाराय को अपनी आगामी फिल्म में जब शत्रुघ्न के साथ साइन करने पहुंचे तो रीना ने कहा—'नायक बदल लो या नायिका'।

राजकुमार कोहली ने कहा—'नायिका तो आप ही रहेंगी' नायक बदल गया। फिल्म का मुहूर्त हुआ,धर्मेन्द्र और रीना राय पर क्लैप दिया गया। यानि अब शत्रु रीना की रुप्पल जोड़ी टूट गई। अब दोनों ही अलग-अलग जोड़ी बनाने में जुटे हैं। देखें इन दोनों का अलग-अलग जोड़ीदार बनकर पर्दे पर कौन आता है? ●




यहाँ
रहने वालों के सपनों में
ज़ीनत अमान
रहती है
दीवाना


इस घर
का मालिक
काम
चोर है
दीवाना.
दिनभर सोता रहता है



सुरेश कुमार मंगवानी—(म० प्र०) गरीब चन्द जी, दुकान का दरवाजा बाहर की ओर खुलता है। घर का दरबाजा अन्दर की ओर खुलता है, तो दिल का दरवाजा किस ओर खुलता है ?

उ० : दिल में रिवालविंग डोर लगा होता है। (यानि घूमने वाला दरवाजा)

एस० के० 'काका'—पानीपत : "पत्नी के बेलन तथा प्रेमिका के सेंडिल की मार में क्या अन्तर है ?"

उ० : पत्नी के बेलन के पैसे आपने चुकाये होते हैं जब कि प्रेमिका के सेंडिल उसके बाप के पैसों से आये होते हैं।

सुरेश कुमार, किरण कुमार—वीरा बाँदा : मैं अपने दोस्त से बेहद प्यार करता हूं, लेकिन वह अक्सर मेरे ख्याल को समझ नहीं पाता, बताइए उसे किस तरह समझाना चाहिए, सब बातें समझा चुका हूं। अपनी सारी मजबूरी बना चुका हू। अब आप ही बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : अब आप उसे उसके हाल पर छोड़ दीजिए। दोस्ती कोई ज्योमेट्री का थ्योरम तो है नही कि चित्र बनाकर दूसरों को समझायी जा सके। आप दोनों के बीच कोई लड़की आ जाए तो बात बन सकती है क्योंकि तब तिकोण बनता है।

मो० जहाँगीर—रांची : गरीब चन्द जी आप हमारे यहां का जलपान कब करेंगे

उ० : मैं तो कई सालों से अपनी मर्जी से आपके घर को अपना घर समझ जलपान करता हूं। आपको पता नहीं लगा ?

अरुण पासवान—भिस्तीपारा : गरीब चन्द जी मुझे एक शिकायत है, हमारा चूहा दीवान कुतर डालता है। आप मुझे उपाय बताएं !!

उ० : आप दो दीवाने खरीदिये। एक उसके कुतरने के लिए, दूसरा अपने लिए।

तिलक राज अरोड़ा—खुरजा : डियर गरीब चन्द जी, कृपया ये बताइये कि युवतियां विदाई के समय रोती क्यों हैं ? जबकि शादी एक पवित्र बन्धन है।

उ० : आजकल पवित्र काम करने वालों को ही रोना पड़ता है। अपवित्र काम करने वाले तो हँसते हैं और ऐश करते हैं।

प्रदीप कुमार 'थापा'—कोट्द्वार (गढ़वाल) : गरीब चन्द जी, इन्सान की जिंदगी में नारी का असली रूप कब देखने को मिलता है।

उ० : हर समय नारी का नकली रूप उन्हीं को दिखाई देता है जिनकी अपनी आंखें नकली होती हैं।

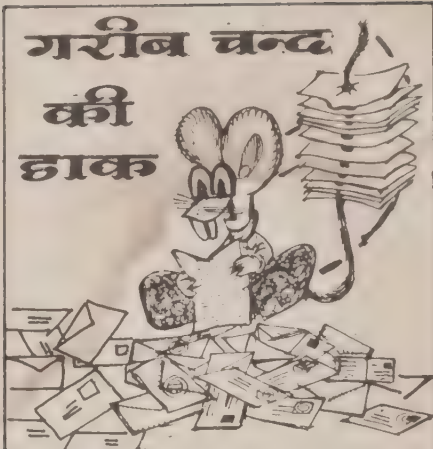
सुनील चक—इलाहाबाद : माई डियर गरीब चन्द जी, मेरी किताबों की दुकान है जिसमें आपके साले साहब ने उधम मचा रखा है कृपया आप उन्हें अपने पास बुला लें।

उ० : गलती तो आपकी अपनी है जो किताबों की दुकान खोल रखी है। बिस्कुट, अंडा, ब्रेड, मक्खन व पनीर की दुकान खोली होती तो वह बेचारा खा-पीकर आराम से पड़ा रहता। अब वह क्या भूखा भी रहे और शोर भी न मचाये ?

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



सिलबिल-पिलपिल
छोटे साइज का बड़ा हंगामा
चारों तरफ गौर से देख, तुझे कोई नयी बात नजर आती है ?
दीवारों पर कॉकरोच ज्यादा चलने लग गये हैं।
नहीं, दीवाना का साइज पहले से बहुत छोटा हो गया है।
उससे मेरी सेहत पर क्या फर्क पड़ता है ?
पड़ेगा कैसे नहीं ? तू बेवकूफ है, कैसे आयेगी ?
तूने मुझे बेवकूफ कहा, मैंने बहुत सह लिया। आज मुक्का मारकर तेरे दोनों दांत तोड़ दूंगा।
देखा फिर ? दीवाने के पहले वाले साइज के हिसाब से तूने मुक्का चलाया और इस चित्र का बार्डर तोड़ दिया। वही तो मैं तुझे समझाना चाह रहा था। धमको उछल-कूद दीवाना के नये साइज के हिसाब से करनी पड़ेगी।
रहा न घनचक्कर का घनचक्कर ही।
तूने मुझे घनचक्कर कहा ? आज तेरी गर्दन अपने पंजों से मैं दबाकर ही रहूंगा। जब तक यह प्रण पूरा नहीं होगा मैं आइसक्रीम नहीं खाऊंगा।
फिर वही बेवकूफी। झपट्टा पुराने दीवाने के साइज का लगाया और नतीजा देख ले दीवाना मैगजीन के पेज से बाहर जा गिरेगा।
झपट!
बाहर से अन्दर आते हुए पचास ग्राम मूंगफलियां लेता आना।



सुरेश कुमार मंगवानी—(म० प्र०) गरीब चन्द जी, दुकान का दरवाजा बाहर की ओर खुलता है। घर का दरबाजा अन्दर की ओर खुलता है, तो दिल का दरवाजा किस ओर खुलता है ?

उ० : दिल में रिवालबिंग डोर लगा होता है। (यानि घूमने वाला दरवाजा)

एस० के० 'काका'—पानीपत : "पत्नी के बेलन तथा प्रेमिका के सेंडिल की मार में क्या अन्तर है ?"

उ० : पत्नी के बेलन के पैसे आपने चुकाये होते हैं जब कि प्रेमिका के सैंडिल उसके बाप के पैसों से आये होते हैं।

सुरेश कुमार, किरण कुमार—वीरा बाँदा : मैं अपने दोस्त से बेहद प्यार करता हूं, लेकिन वह अक्सर मेरे ख्याल को समझ नहीं पाता, बताइए उसे किस तरह समझाना चाहिए, सब बातें समझा चुका हूं। अपनी सारी मजबूरी बना चुका हूं। अब आप ही बताइये मैं क्या करूं ?

उ० : अब आप उसे उसके हाल पर छोड़ दीजिए। दोस्ती कोई ज्योमेट्री का थ्योरम तो है नही कि चित्र बनाकर दूसरों को समझायी जा सके। आप दोनों के बीच कोई लड़की आ जाए तो बात बन सकती है क्योंकि तब तिकोण बनता है।

मो० जहाँगीर—रांची : गरीब चन्द जी आप हमारे यहां का जलपान कब करेंगे

उ० : मैं तो कई सालों से अपनी मर्जी से आपके घर को अपना घर समझ जलपान करता हूं। आपको पता नहीं लगा ?

अरुण पासवान—भिस्तीपारा : गरीब चन्द जी मुझे एक शिकायत है, हमारा चूहा दीवान कुतर डालता है। आप मुझे उपाय बताएं !!

उ० : आप दो दीवाने खरीदिये। एक उसको कुतरने के लिए, दूसरा अपने लिए।

तिलक राज अरोड़ा—खुरजा : डियर गरीब चन्द जी, कृपया ये बताइये कि युवतियां विदाई के समय रोती क्यों हैं ?? जबकि शादी एक पवित्र बन्धन है।

उ० : आजकल पवित्र काम करने वालों को ही रोना पड़ता है। अपवित्र काम करने वाले तो हँसते हैं और ऐश करते हैं।

प्रदीप कुमार 'थापा'—कोट्द्वार (गढ़वाल) गरीब चन्द जी, इन्सान की जिंदगी में नारी का असली रूप कब देखने को मिलता है।

उ० : हर समय नारी का नकली रूप उन्हीं को दिखाई देता है जिनकी अपनी आंखें नकली होती हैं।

सुनील चक—इलाहाबाद : माई डियर गरीब चन्द जी, मेरी किताबों की दुकान है जिसमें आपके साले साहब ने उधम मचा रखा है कृपया आप उन्हें अपने पास बुला लें।

उ० : गलती तो आपकी अपनी है जो किताबों की दुकान खोल रखी है। बिस्कुट, अंडा, ब्रेड, मक्खन व पनीर की दुकान खोली होती तो वह बेचारा खा-पीकर आराम से पड़ा रहता। अब वह क्या भूखा भी रहे और शोर भी न मचाये ?

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल-पिलपिल
छोटे साइज का बड़ा हंगामा
चारों तरफ गौर से देख, तुझे कोई नयी बात नजर आती है ?
दीवारों पर कॉकरोच ज्यादा चलने लग गये हैं ।
नहीं, दीवाना का साइज पहले से बहुत छोटा हो गया है ।
उससे मेरी सेहत पर क्या फर्क पड़ता है ?
पड़ेगा कैसे नहीं ? तू बेवकूफ है, कैसे आयेगी ?
तूने मुझे बेवकूफ कहा, मैंने बहुत सह लिया । आज मुक्का मारकर तेरे दोनों दांत तोड़ दूंगा ।
देखा फिर ? दीवाने के पहले वाले साइज के हिसाब से तूने मुक्का चलाया और इस चित्र का बार्डर तोड़ दिया । वही तो मैं तुझे समझाना चाह रहा था । अबको उछल-कूद दीवाना के नये साइज के हिसाब से करनी पड़ेगी ।
रहा ल नचक्कर का घन चक्कर ही ।
तूने मुझे घनचक्कर कहा ? आज तेरी गर्दन अपने पंजों से मैं दबाकर ही रहूंगा। जब तक यह प्रण पूरा नहीं होगा मैं आइसक्रीम नहीं खाऊंगा ।
फिर वही बेवकूफी । झपट्टा पुराने दीवाने के साइज का लगाया और नतीजा देख ले दीवाना मैगजीन के पेज से बाहर जा गिरेगा ।
झपट !
बाहर से अन्दर आते हुए पचास ग्राम मूंगफलियां लेता आना ।



मैं सिलबिल को समझा रहा था कि दीवाना का साइज छोटा हो गया है । अपनी हरकतें उसी हिसाब से कम करनी पड़ेंगी । मूर्ख नहीं माना, नतीजा यह हुआ कि-बाहर जा गिरा । नाली में न गिर गया हो ।
बाहर जा गिरा ? होता था । जाने कहां आलू के बोरे में चावल पचास मील तिनका और
तुम भी वही गलती कर रहे हो । तुम पुराने साइज के डायलाग बोल रहे हो । वाक्य का आधा हिस्सा बाहर गिर रहा है और समझ में नहीं आ रहा है तुम कह क्या रहे हो ?
देखो याड़ी लोगों, थम दोनों अपना-अपना दिमाग ठंडा कर लो, दीवाना का साइज छोटा होने से थम दोनों पर भयानक संकट आया है । इस संकट के सामने तेल समस्या और कश्मीर समस्या भी छोटी पड़ जाती हैं । तुम्हें पहले की तरह धमा चोकड़ी नहीं मचानीहोगी थमारे सिर-विर फूट जायेंगे । नए साइज के हिसाब से काम करना होगा ।
ठीक है मैं खाना खाने के बाद लो बोल्यूम पर डकार मारूंगा ।
मैं पाइप के छोटे-छोटे कश खींचूंगा ।
इस नये साइज का एकफायदा तो है कि हमारे शरीर का आधा भाग ही दिखाई देगा । मैंने ऊपर सूट पहन रखा है पूरा जैन्टलमैन नजर आ रहा हूं । किस को पता है कि नीचे सिर्फ कच्छा पहन रखा है मैंने ? पैंट की बचत हो गयी ।
और कच्छा भी तीन जगह से फट्या हुआ है ।
एक और मुसीबत है, अब पाठकों के मुंह हमें बड़े दिखाई दे रहे हैं । कोई मुंह फाड़-कर हसता है तो ऐसा लगता है जैसे पार्सल वाला लैटर बाक्स खुल गया हो । और यह भी पता लग जाता है कि किस पाठक ने ठीक तरह मंजन नहीं किया है ।


चूहे बाकी सब तो हम सम्भाल लेंगे । लम्बी चीजों को खींचकर छोटी कर लेंगे । ऊंची चीजों की टांगें काटकर ठिगनी बना देंगे । सादा जीवन ऊंचे विचार की जगह हम सादा जीवन नीचे विचार का ग्रसूल ग्रपना लेंगे । दिक्कत होगी तो एक ही । सिल-बिल की खोपड़ी में जो भैंस है जिसका साइज ग्रक्ल से बड़ा है उसका क्या होगा ? छोटे साइज के दीवाने में भैंस कहां ग्रायेगी ?
उसी बारे में सोच रहा था ।
खबरदार जो मेरी भैंस को थमने कुछ कहा ।
मेरी बागड़ी भैंस मुझे ग्रपनी जान से भी प्यारी है इसी भैंस के कारण तो मेरा दिमाग साफ रहता है वर्ना वहां घास का जंगल खड़ा हो गया होता अब तक । मेरे दिमाग में जो तरावट बनी रहती है वह इसी भैंस के गाढ़े दूध का कमाल है। मैं और मेरी भैंस का जन्म-जन्म का साथ है ।
मैं तो इसी भैंस के सहारे दुनिया पर कब्जा करने की स्कीम बना रहा हूं । जब दुनिया में तेल खत्म हो जाएगा तो मैं ग्रपनी भैंस के गोबर के कंडे एक्सपोर्ट कर करोड़ोंडालर कमाऊंगा ।
किंग आफ गोबर गैस
तभी दरवाजे पर दस्तक होती है। कोई ग्राया है ?
ग्रापको किससे मिलना है ?
मुझे सिलबिल से मिलना है । मुझे मेरे दोस्त ऊका पौंगा ने भेजा है ।
ऊका पौंगा ? क्यों क्यों ? क्या मैंनें उससे पैसे उधार लिए थे ।
यह तो सुपर मच्छर है ।
वही सुपर मकड़ा जिसने थमारी ग्रच्छी धुनाई की । मेरे हाथ में खुजली हो रही थी उसने तुम्हारा एडरेस दिया ग्रौर कहा कि तुम पिटने में माहिर हो ।



सिलबिल पिलपिल के नए कारनामे अगले अंक में पढ़िए !

पृष्ठ२३से आगे
से सर्चलाइटों, साइरनों और भोंपुओं के साथ घुसते।

ठीक उसी समय किचन से क्रोधित आवाजें सुनाई पड़ीं, जो इस बात का संकेत था कि रकम हाथ नहीं लगी है। किचन से कमरे में आने के पदचाप आये। सुलेमान और भीमा गुस्से में झल्लाते हुए सीधे बंदियों वाले कोने के पास आये। सुलेमान ने टार्च की रोशनी फर्श पर गड़ाये रखी। उन्हें आभास भी नहीं हुआ कि दूसरे अंधेरे कोने में एक दर्जन अज्ञात व्यक्ति दीवार के साथ लगे सांस रोके खड़े हैं।

सुलेमान आंखें लाल करता हुआ राजू की ओर देखकर घुर्रा कर बोला, 'कुत्ते के पिल्ले, तू हमें बेवकूफ बना रहा है? अगर अपनी जान की खैर चाहता है तो सीधे-सीधे बता रकम कहां है?'

अंधेरे में संघर्ष

अचानक सात आठ आदमी सुलेमान और भीमा पर टूट पड़े। सुलेमान काफी तगड़ा था अत: दो आदमियों को झटक कर अलग करने में सफल हो गया लेकिन दूसरे ही क्षण चार आदमी फिर उस पर टूटे और उसे काबू में कर लिया। भीमा को पहले ही वार में दो आदमी काबू में कर चुके थे। सुलेमान के हाथ से टार्च छिटक कर दूर जा गिरी थी और बुझ गई थी अतः यह संघर्ष अंधेरे में ही हुआ।

एक व्यक्ति ने आदेश दिया, 'जल्दी करो। तीनों को रस्सियों से बांधकर बोरियों के अंदर डाल दो।'

सुलेमान अब भी छटपटा रहा था लेकिन उसकी एक न चल रही थी। बीच-बीच में वह भद्दी गालियां देता जाता था। अंधेरे में घुसे आक्रमणकारियों ने देखते ही देखते तीनों को बांधकर उनके मुंहों में कपड़े ठूंस कर उन्हें चिल्लाने लायक भी न छोड़ा। बदलू तो पहले ही अर्धमूर्च्छित दशा में था। उसके पश्चात उन्होंने उनके सिरों पर बोरियां डाल दीं।

'ठीक है।' वही व्यक्ति फिर बोला, 'तुम बाहर चलो। मैं इन छोकरों को छुड़ाता हूँ।'

दूसरे लोग चुपचाप बाहर चले गये। वही व्यक्ति अंदर रह गया। उसने जेब से टार्च निकाली और तीनों लड़कों पर रोशनी डाली और बोला—

'अच्छा है कोई तुम पर गिरा नहीं और तुम्हारी हड्डी-पसलियाँ नहीं तोड़ डालीं, अब मैं तुम्हारी रस्सियाँ खोलता हूं।'

उसने टार्च नीचे फर्श पर इस प्रकार रखा कि रोशनी कोने में बंधे पड़े लड़कों पर पड़ती रहे। और चाकू निकालकर रस्सी काटने के लिये आगे बढ़ा! श्याम व मोहिन्दिर तो उसे पहचान न पाये लेकिन राजू उसके निकट आते ही उसे पहचान गया। वह वही मूंछों वाला बंजारा था जो उसे रानी के तम्बू के पास मिला था।

'तुम?' राजू ने आश्चर्य पूर्वक पूछा, 'तुम्हें तो रानी बन्जारिन के कंम्प में देखा था!'

बंजारा केवल उसे देख मुस्कराया और चुपचाप रस्सियां काटता रहा कुछ देर बाद जब रस्सियां कट गयीं तो बोला, 'हां! अब हम दोबारा मिल रहे हैं।'

'लेकिन तुम यहां कैसे पहुंचे?' खड़े होकर कलाइयां मलते और बदन को सीधा करते हुये राजू ने उत्सुकता प्रकट की।

'इस वक्त बात करने का समय नहीं है।' वह बोला, लेकिन वह चौथा आदमी किधर है?

इस सब गोरखधंधे में किसी ने नटवर का ख्याल नहीं किया था! शायद वह अंधेरे में जब मारपीट हो रही थी तो चुपचाप

अपनी रस्सियां ढीली करता रहा और मौका पाकर भाग गया। जहां वह बंधा पड़ा था उसके कुछ दूर खाली रस्सियां पड़ी थीं।

बंजारा बोला, 'अभी दूर नहीं गया होगा। कोई बात नहीं। पुलिस के लिये यह तीन ठग तो हैं ही। अब बाहर चलो! रानी तुमसे बात करना चाहती है।'

'रानी', राजू ने बंजारे का अनुसरण करते हुये कहा। श्याम और मोहिन्दर भी उनके पीछे थे। जब वह बाहर जा ही रहे थे कि उनकी ओर एक ट्रक के आने की आवाज आई। ट्रक ठीक पास आकर रुक गया। बंजारे ने पीछे चढ़ने का इशारा दिया।

जब वह पीछे से ट्रक में चढ़े तो क्या देखते हैं कि वहां वही बंजारिन रानी बैठी है। वही वेश-भूसा और वही सब तामझाम।

'रानी सब ठीक हो गया!' बंजारे ने रानी को बताया, 'तीन पकड़ लिये गये और एक भाग गया।'

तीनों रानी के पास आकर बैठ गये और बंजारा पीछे खड़ा-खड़ा पहरा देता रहा।

राजू की ओर घूरते हुये रानी बोली, 'मैंने कहा था कि हम फिर मिलेंगे। यह हमारी रेखाओं में व सितारों में साफ लिखा था।'

'क्या आप लोग हमारा पीछा करते रहे?' राजू ने प्रश्न किया।

'हां!' रानी बोली, 'मेरे आदमी पीछा करते रहे, जब तुम पहले मेरे पास आये थे तो काले शीशे ने कहा 'खतरा'। और हम तुम्हें किसी प्रकार का नुकसान पहुंचने नहीं देना चाहते थे। आज केवल एक आदमी तुम्हारे पीछे था जब उसे खतरे का आभास हुआ तो उसने हम सबको बुलवा लिया! अच्छा तो रकम मिली?'

'नहीं', राजू ने बुझे स्वर में कहा, 'शायद यहां है ही नहीं। मुझे पूरा विश्वास था। उस पत्र के अनुसार तो यही अर्थ निकलता है। होना तो कैलेंडरों के पीछे ही चाहिए था।'

'अलीबाबा को पक्का विश्वास था कि लूट की रकम का सुराग उस पत्र में है। पर वह स्वयं पहेली हल न कर सका।' रानी बोली।

'आप को कैसे पता? आप अलीबाबा को जानती हैं?' राजू ने सवाल पूछा।

'हां। एक प्रकार से वह मेरा रिश्तेदार ही था।' रानी ने उत्तर दिया, 'मैं उसके नाम पर लगा कलंक मिटाना चाहती थी। मेरा ख्याल था कि तुम एक प्रतिभाशाली युवा जासूस हो। पत्र में छिपी पहेली हल कर लोगे। खैर यह तो बताओ कि कैलेंडरों के पीछे देखने का कारण?'

राजू ने सिर खुजलाते हुए कहा, 'जग्गी पत्र में साफ-साफ तो कुछ लिख नहीं सकता था। उसे पता था कि पत्र दो-तीन स्थानों पर सैंसर होगा। अतः उसने सन्देश भेजने का अजीब तरीका सोचा।'

'वह क्या बेटे?' रानी राजू की ओर देखे जा रही थी।

उत्तर श्याम ने दिया, 'उसने कुछ चक्कर लिफाफे पर लगे टिकटों के साथ चलाया। उसने ठीक एक-दूसरे के नीचे दो टिकट चिपकाए, एक-एक पैसे का और दूसरा चार पैसे का। अब जो एक वाला है उसपर हरे पत्ते का डिजायन है जो पैसों का प्रतीक है और दूसरा चार वाला कैलेंडरों के बारे में टिकट था। इसलिए हमने अन्दाजा लगाया पैसे कैलेंडरों के नीचे होने चाहिएं। क्योंकि वह एक वाला उस चौक्के के नीचे चिपका...'

'श्याम ठहरो!' 'राजू अचानक चिल्लाया!

श्याम ने पलकें झपकाईं। 'क्या बात है राजू?' उसने पूछा।

'जरा दोबारा कहना जो तुम अभी कह रहे! अन्तिम वाक्य...'

'क्यों ? मैं कह रहा था कि एक वाला चौक्के के नीचे चिपका···'

'यही तो है ! राजू उछल पड़ा, 'यही तो है पहेली का हल !'

'क्या है पहेली का हल ?' मोहिन्दर ने अज्ञानता प्रकट की। वह, श्याम और रानी ने मूढ़ होकर राजू के उत्तेजना से लाल होते चहरे की ओर देखा !

आखिर राजू ने रहस्य खोला, 'रानी जी, हम अब तक उस पत्र के एक महत्वपूर्ण भाग को नजर अन्दाज कर रहे थे। वह है पत्र का अन्तिम भाग जिसमें जग्गी अलीबाबा को क्रिकेट में रुचि बनाये रखने के लिये कहता है। हमें पहले ही समझ जाना चाहिये था कि ऐसे पत्र में जिसमें जिंदगी और मौत की बात है क्रिकेट की बात कोई क्यों कर जिक्र करेगा, जब तक कि उसमें कोई भेद न छिपा हो। क्रिकेटी भाषा में चार को चौक्का ही कहेंगे। अब संदेश यह बना कि पैसे···।'

इससे पहले कि राजू बात पूरी करता श्याम ने जोर से अपने घुटनों पर हाथ मारा और जोर से चहक उठा, पैसे चौक्के के नीचे रखे हैं। किचन में जो खाना बनाने का चौका है उसी के नीचे गढ़े हैं।'

राजू खुशी के मारे हाथ रगड़ रहा था, और हम समझे कि उसका इशारा कैलेंडरों की तरफ है क्योंकि उसकी बहन ने हमें बताया था कि कैलेंडर उसी ने चिपकाये थे। हुआ यह कि जब एक दिन उसकी बहन काम पर गयी होगी, उसने पूरा चौका खोद कर माया नीचे दबा दी और दोबारा चौका वैसे ही बना दिया होगा। उसकी बहन ने बस यही सोचा होगा कि जग्गी ने घर पड़े-पड़े बोरियत से बचने के लिये चौका लीप दिया है।'

मोहिन्दर ने आगे जोड़ा, 'हमने यह सोचने का कष्ट नहीं किया कि कैलेंडरों के पीछे कोई नोट क्यों छिपायेगा ? उनका सीलन के कारण खराब होने या कैलेंडर फटने पर नजर आने का हरदम खतरा बना रहेगा। जग्गी ऐसा कच्चा काम करता ?'

राजू भी इस विचार धारा से सहमत हुआ, और एक खतरा यह भी तो होता कि पैसे निकालने के लिए कैलेंडर उखाड़ते समय नोटों के फटने का खतरा बना रहता।

रानी ने ताली बजाकर पहरा दे रहे बंजारे का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और आदेश दिया, 'जल्दी ट्रक के आगे से खुदाई का सामान निकालो। शुक्र है कि हम घर से बोरी, रस्सियां और खुदाई का सामान आदि लेकर चले थे।'

दो बंजारे, तीनों जासूस और रानी बिना क्षण की देर किये वापिस मकान में गये और वहां बंधे पड़े गुंडों की ओर ध्यान दिये बिना वे सीधे किचन में पहुंचे। अवश्य ही वहां खाना बनाने के लिये वैसा ही चौका था जैसे पुराने ढंग की गृहस्थियों में अथवा निम्न वर्ग के घरों में होता है। बंजारों ने खटाखट खुदाई शुरू कर दी।

पांच फीट नीचे तक कुछ न निकला। सबके चेहरे तनाव पूर्ण हो गये। राजू के माथे पर चिन्ता की लकीरें खिच आईं। खुदाई करने वाले बंजारे ने प्रश्नसूचक दृष्टि से रानी की ओर देखा। रानी ने और खुदाई करने का आदेश दिया ?

छः फुट की गहराई पर कुदाली की चोट पर ऐसी आवाज आई जैसे धातु से धातु टकरायी हो। सब उत्सुकतावस आगे झुक गये। बंजारों ने धातु की वस्तु के चारों ओर हो सावधानी से खुदाई शुरू कर दी और कुछ ही मिनटों में स्टील का एक छोटा सन्दूक निकालकर ऊपर रख दिया। सबके चेहरों पर आशा की किरणें नाच उठीं। सन्दूक में ताला न लगा था।

रानी ने धैर्य त्याग झट से उसका ढक्कन उठा दिया। भीतर का नजारा देख

शेष पृष्ठ ५४ पर

प्रेम अक्षर ज्ञान
लव प्राइमर

दीवाना शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रेम की प्रथम कक्षा के विद्यार्थियों के लिए स्वीकृत। किसी महापुरुष ने कहा है कि पोथियां पढ़ कर कोई ज्ञानी नहीं होता जिसे अढ़ाई अक्षर प्रेम का आ गया वही ज्ञानी है ।

अ से अंगड़ाई



जो प्रेमी की याद आने पर आती है ।

आ से आइसक्रीम



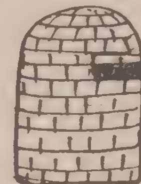
जो प्रेमी-प्रेमिका को खिलाता है ।

इ से इश्क



जिसका भूत सवार होता है

ई से ईंट



जिसकी दीवार अनारकली के चारों ओर चिनी गई थी ।

उ से उपहार



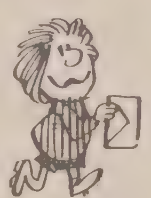
जो प्रेमिका बर्थडे पर चाहती है ।

ऊ से ऊई



जो प्रेमिका प्रायः मुंह से निकालती है ।

ए से एहसान



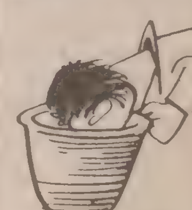
जो प्रेम-पत्र पहुंचाने वाला प्रेमी पर करता है ।

ऐ से ऐ जी



जो प्रेमिका शादी करने के बाद उनको कहकर पुकारती है ।

ओ से ओखली



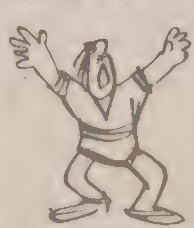
जिसमें प्रेमी सिर देता है ।

औ से औकात



जिसकी याद प्रेमिका का बाप प्रेमी को दिलाता है

अं से अंक



जिसमें प्रेमी अपनी लैला को भरना चाहता है ।

अः

क से कलाई



जो हसीना की बड़ी नाजुक होती है ।

ख से खिड़की



जिस पर से प्रेमिका अपने प्यासे प्रेमी को दर्शन देती है

ग से गजरा



जो रोमियो जूलियट के बालों में बांधता है।

घ से घर



जिसे तोता-मैना मिल बसाना चाहते है।

ङ

च से चक्कर



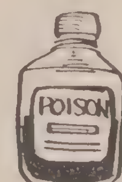
जो मजनूं प्रेमिका के घर के लगाता है।

छ से छलिया



जो प्रेमिका को प्रेमी लगता है।

ज से जहर



जो प्रेम रोग की आखिरी दवा है।

झ से झगड़ा



जिसके होने पर प्रेमी प्रेमिका में कुट्टी हो जाती है।

ञ

ट से टेसू



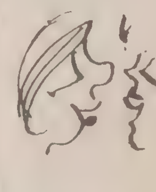
जिसे प्रेमिका बहाती है।

ठ से ठस्का



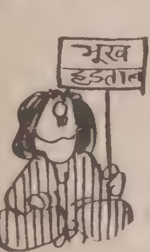
जिसके साथ प्रेमिका प्रेमी के सामने से गुजरती है।

ड से डायलॉग



जो फिल्मों से रटकर बोले जाते है।

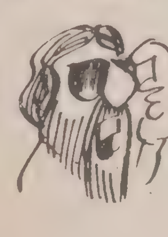
ढ से ढीट



जो प्यार में बनना पड़ता है।

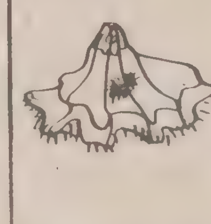
ण

त से तकदीर



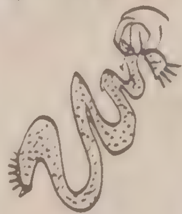
जिसकी दुहाई प्रेम में असफल प्रेमी देते हैं।

थ से थाती



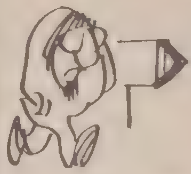
जो प्रेमी के लिए प्रेमिका का पुराना रूमाल होता है।

द से दुपट्टा



जिसे इन्हीं लोगों ने प्रेम में ले लीना था।

ध से धक्के



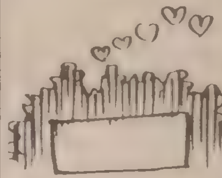
जो प्रेम में खाने को मिलते हैं।

न से नखरा



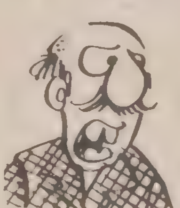
जो प्रेमी को प्रायः प्रेमिका का उठाना पड़ता है।

प से पार्क



जहां प्रेमी जोड़े मिलते हैं झाड़ियों में।

फ से फटकार



जो प्रेमियों को पकड़े जाने पर मिलती है।

ब से बाल



जो प्रेमिका प्रायः बनाती है।

भ से भूल



जो प्यार में प्रायः हो जाती है।

म से मस्का



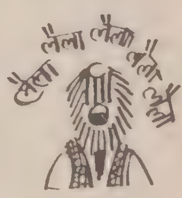
जिसे प्रेमी प्रेमिका के लगाता है।

य से यकीन



जो अपने प्यार के सच्चेपन का प्रेमी प्रेमिका को दिलाता है।

र से रट



जो प्रेमी लगाता है।

ल से लट्टू



जो प्रेमी-प्रेमिका पर होता है।

व से वश



जो जमाने के रस्मो-रिवाज पर प्रेमियों का नहीं चलता।

श से शरारत



जिसे मनचले करते हैं।

ष षडयन्त्र



जो प्रेम के दुश्मन, प्रेमियों के विरुद्ध रचते हैं।

स से सगाई



जो प्रेमिका की किसी और के साथ होती है।

ह से हाथ



जिसे मलता प्रेमी रह जाता है, प्रेमिका की शादी कहीं और होने पर।

फैंण्टम और जंगल शहर



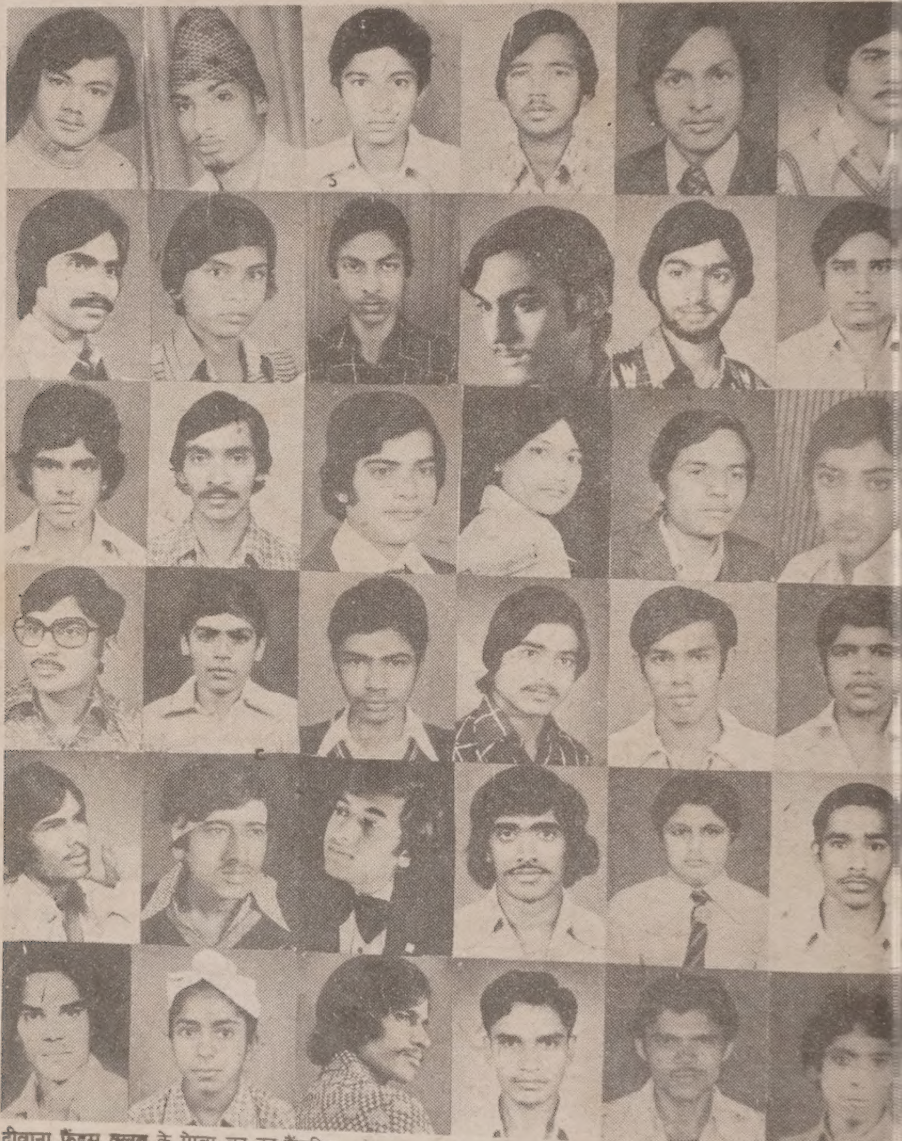


बंगाला जेल में···
वाह ! ऐसा हो सकता है क्या ?
कोशिश तो जरूर करनी चाहिये तैयार रहना जोको ।
अलग नहीं रह सकोगे कैप, हमारी याद आयेगी ?
कहते हैं कि ऐसी अच्छी जेल से दूर रहना मुश्किल है ।
क्या हुआ ?
कैप······बहुत अजीबो-गरीब आइडिया है ।
खतरा तो मैं ही उठा रहा हूं । मेरी थोड़ी मदद करो और मुझे वह हैलीकॉप्टर जो पेट्रोल भर रहा है. दिलवादो ।
AIRPORT
तुम यहां क्या कर रहे हो ? यह सुरक्षित क्षेत्र है
मैं खाली हैलीकॉप्टर देख रहा हूं । सार्जेन्ट ।
© 1979 King Features Syndicate Inc World rights reserved
अह :
??!!
बंगाला जेल में एक हजार कैदो व्यायाम कर रहे हैं ।
सब एक साथ, एक दो···
···एक दो···एक दो ?
?
एक दो, एक दो···
??
कैप की स्कीम चल गई !
वह हैलीकॉप्टर इतना पास क्या कर रहा है ?
हो सकता है उसका इजन खराब हो ।
एक दो···
एक दो···
एक दो···
??
!!
कैप !
जल्दी करो !



अरे यार… मुझे भी ले चलो।
दूर रहो।
वह एक कैदी ले गया।
गोली नहीं मार सकते, यहां पर और लोग हैं।
मुझे भी लो… मुझे भी लो… मुझे भी लो…
जोको, बन्दूक इस्तेमाल करो। उनको दूर रखो।
हां जरूर।
जिस समय हैलीकॉप्टर जेल की दीवार के ऊपर से निकलता है……
झुक जाओ! मशीन गन है!
भागो यार! बहुत बढ़िया!
कैप हम जीत गये।
हम से तुम्हारा क्या मतलब?
बंगाला सन, कैदी हैलीकॉप्टर में उड़ गया। चोरी किये गये हैलीकॉप्टर में, जेल में उतरे और उड़ गये।
खबर फैलती है
जहाज अब हैलीकॉप्टर की तलाश में हैं……
आखिरी बार पूरब की ओर जाते हुये देखे गये……
…गहरे जंगल में और फैण्टम की गुफा में……
आखिरी बार पूरब की ओर जाते हुये देखे गये……
इसका मतलब जंगल की ओर भी हो सकता है।
चुराया गया हैलीकॉप्टर पूरब की तरफ जा रहा था (क्लिक)
भागे हुये कैदियों के पास जरूर हथियार होंगे, जंगल में दंगा कर सकते हैं
तोबो यह खबर जंगल में सब लोगों को बतादो। 'आदमी चिड़िया' के लिये होशियार रहना।
ऐसा ही करूंगा चलते-फिरते भूत।
बोलते हुये ड्रमों के द्वारा एक दूसरे से आगे और आगे पहुंचती है।
फैण्टम का कहना है चिड़िया आदमी से सावधान रहना।
क्रमशः

दीवाना फ्रैंड्स क्लब



दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप-के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट-साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

पता: ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिख

नाम ____________________

____

पता ____________________

____

गोविन्द राम दली पो० ग्रा० भीम्फेदी-३, जिला मकवानपुर, (नेपाल), १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना,
क पढ़ना, फिल्म देखना, पत्र-मित्रता करना । २. जोत सिंह भाटिया, महावीर पारा, डोंगरगढ़
० प्र०), २२ वर्ष, मुकेश के गीत सुनना, फास्ट बालर बनने (क्रिकेट) की इच्छा । ३. शिवी
रवाल, ५६ बी, टैगोर नगर, लुधियाना. १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना । ४. नरेश चौहान, रविन्द्र निके-
पैलेस मार्ग, सोलन-१७३२१२, (हि० प्र०), १७ वर्ष, टिकट संग्रह, प्रत्येक से पत्र-मित्रता, प्रथम
स आवरण संग्रह, प्रत्येक पत्र का उत्तर देना । ५. रविन्द्र कुमार (शैलेन्द्र), मकान नं०
७/२३६, A नदेसर, वाराणसी (यू०पी०) १६ वर्ष, पत्र मित्रता, स्काऊटिंग, नये स्थानों पर घूमना ।
महेश कुमार तलरेजा, श्री सेठ रघुमल, लल्लू पोखर मुंगेर, १८ वर्ष, टेनिस खेलना, देश विदेश
ना, पत्र मित्रता करना, फोटोग्राफी करना, दुनिया की जानकारी रखना । ७. रजनीश, द्वारा
० पो० श्रीवास्तव २२/३०२, लशकरी गंज, सासाराम, १८ वर्ष, शासकीय सेवा, क्रिकेट खेलना ।
सम्पत संकलेचा, करमु जी की गली, बाड़मेर (राज०) १८ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना,
केट खेलना, संगीत हिन्दी व अंग्रेजी दोनों सीखना । ९. उपेन्द्र प्रसाद बेसहारा, १८ वर्ष, पढ़ना,
टो ग्राफर बनना, कविता पढ़ना । १०. चन्द्रप्रकाश, २३७१, नेहरू कालोनी, हाथरस, उ० प्र०,
वर्ष, सिनेमा देखना पत्रिकायें पढ़ना, रेडियो सुनना आदि । ११. रवि प्रकाश अरोड़ा, २३७१,
रू कालोनी, हाथरस, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, फिल्में देखना, वाद-विवाद, बैड मिन्टन, शतरंज
दे । १२. जयप्रकाश वर्मा, पोस्ट बाक्स नं० ५६ डिब्रूगढ़, असम २५ वष, पत्र मित्रता, डाक
कट संग्रह करना । १३. अशोक कुमार पाण्डे, ७, मारकस क्वाटर कलकत्ता, १६ वर्ष, पत्र मित्रता,
ीत । १४. रूप कुमार पंवार, रेलवे स्टशन, सनवौरा, डा० धर्मपुर, (कुल्लू) (हि० प्र०), २२
पेन्टिंग करना, फिल्में देखना, फरमाइश भेजना, गाने गाना । १५. ओम प्रकाश नवीन, वासवानी
ट कार्नर, जयपुर, २२ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना, आपस में मजाक करना, स्कूटर चलाना ।
. टीका नारायण मानन्धर, ६।१४२, पुराना हिसार, काठमांडो, १७ वर्ष, पत्र मित्रता करना,
ाना पढ़ना, देश-विदेश घूमना । १७. अभय कुमार पाण्डेय, एल-१२-सी, द्वारा श्री गोपी नाथ
डेय, स्टेशन रोड, मुरादाबाद. १६ वर्ष, दीवाना जैसी पत्रिकायें पढ़ना, संगीत । १८. प्रवीन
ार अरोड़ा, ५।२०५ रघुवीर पुरी, मसूदाबाद, अलीगढ़, १८ वर्ष, पिक्चर देखना, गर्ल फ्रेन्ड
ाना । १९. प्रदीप कुमार सेठी, धोला कुआ, रानी बाजार, सहारनपुर, १८ वर्ष, पढ़ना तथा
ट-छोटे बच्चों को प्यार करना, डाक टिकट संग्रह करना, घूमना, सबसे प्यार करना, क्लब
लना, पढ़ना, लिखना । २०. राजीव कठपालिया, ए-११४, लाजपत नगर-२, १४ वर्ष, खेलना-
ना । २१. दिलबाग सिंह रापड़िया. गांव पाली, तहसील हांसी, जिला हिसार, १६ वर्ष, दीवाना
ना, बड़ों की सेवा करना, दुनिया की सैर करना, मोटर-साइकिल चलाना । २२. रजनीश कुमार
ू 'प्रेम' अध्यक्ष-वीणा रे० श्रो० संघ, एम० जी० रोड, खगड़िया, (बिहार) १६ वर्ष, पत्र मित्रता
ना, डाक टिकट संग्रह, फरमाइश भेजना, दीवाना पढ़ना इत्यादि । २३. तोपाश चौधुरी, १२३६,
टर नं० ८, रामा कृष्णा पुरम, नई दिल्ली, १६ वर्ष पत्र-मित्रता तथा फुटबाल खेलना
. अनिल कुमार अग्रवाल, ११२/३३२६, पन्त नगर, घाट कोपर, बम्बई, २२ बर्ष, पढ़ाई, तन्दु-
ती बनाना, पत्र मित्रता । २५. कुवर देवेन्द्र सिंह राव, २५ गौतम गली, धौती बावड़ उदयपुर,
ाज०) १८ वर्ष, एक्टिंग, पत्र मित्रता । २६. शालू खुराना 'सुरेश' होती राम, घनश्याम दास जींद,
वर्ष, पेंटिंग करना, दीवाना पढ़ना । २७. पप्पी खुराना, शालू स्टूडियो जींद, १४ वर्ष, फिल्में
ना, पत्र मित्रता (लड़कों से), बैड मिन्टन खेलना । २८. नरेंद्र कारवो, २३६/१७७५, मोतीलाल
र, गोरेगांव, बम्बई, २३ वर्ष, व्यायाम करना, गाना गाना, दीवाना पढ़ना, प्यार करना ।
. अमित खुराना, २६/१०५, शक्ति नगर, १२ वर्ष, दोवाना पढ़ना, खेलना । ३०. नरेश चन्द्र
हेश्वरी, २५. चाह कमाल हापुड़, उ० प्र०, २१ वर्ष पत्र मित्रता, पत्रिकायें पढ़ना । ३१. प्रताप
व, द्वारा श्री नारायण राव इगले, लश्कर, १८ वर्ष, घूमना-फिरना, गाने लिखना, बाजा
ाना और कहानियाँ सुनना । ३२. कुलवन्त सिंह, निर्मल बाग कनखल हरिद्वार, जिला
ारनपुर, (उ० प्र०), १५ वर्ष, लूना, विक्की चलाना व दीवाना पढ़ना, पिक्चरें देखना ।
. गेन्दालाल पांचाल, २४ सुभाष रोड, क्रमांक-१ नागदा जंक्शन, जिला उज्जैन, (म० प्र०), २६
, फरमाइश भेजना, फिल्म देखना, और भ्रमण करना इत्यादि । ३४. अशोक कुमार त्रिपाठी, द्वारा
० एम० त्रिपाठी दी मेवाड़, शुगर मिल भूषण सागर, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, दीवाना पढ़ना,
नेमा देखना आदि । ३५. आर० एन० बावने, मु० पो० तेलहारा, जिला अकोला, २२ वर्ष, चिट्ठी
नना, पत्र मित्रता करना, फिल्में देखना, कविता लिखना, न्यूज भेजना । ३६. धर्मबीर, राज फोटो
डियो, पानीपत, १८ वर्ष, समाज सेवा, परोपकारी बनना ।

वाना

पृष्ठ ४५ से आगे

सभी खुशी से उछल पड़े। ठीक वैसी ही खुशी जैसे एक टीम को कठोर संघर्ष के बाद विजय प्राप्त होती है।

ट्रंक में रखे पोलीथीन के तीन बैगों के अन्दर से नोटों के बन्डल झांक रहे थे।

रानी ने राजू की पीठ थपथपाई। उसकी आंखों में आंसू थे। उसने भर्राई गले से कहा, 'अच्छा बेटो, अब हमें चलना चाहिये। हम पुलिस को खबर कर देंगे। तुम तीन पुलिस के आने तक यहीं रहना!'

राजू ने रानी का लबादा पकड़ा, 'ठहरिये जरा! जाने से पहले आप हमें बोलती खोपड़ी, ट्रंक और वह कैसे दोबारा हमें मिली इस बारे में बताते जाइये।'

रानी ने लबादा छुड़ाया व बोली, 'अभी नहीं! दो सप्ताह बाद सब कुछ बताऊंगी, तुम मुझे वहीं मिलना जहां पहले मिले थे। हम दो सप्ताह बाद वहीं डेरा डालेंगे।

इतना कह कर रानी और बंजारे चले गये। कुछ देर बाद ट्रक के जाने की आवाज आई।

अन्त

उपरोक्त घटना के लगभग तीन सप्ताह बाद तीनों जासूस अपने हेडक्वार्टर में बैठे थे और संवाददाता सुरेश अपने समाचार पत्र के लिए इन्टरव्यू ले रहा था। केस की सफलता के लिए पहले ही बधाई दे चुका था।

सुरेश, 'तुम तीनों ने कमाल का काम किया है। लूट की रकम बरामद करा दी जिसे खोजने में पुलिस सिर पटक कर हार चुकी थी।'

राजू इतना खुश नहीं था, 'लेकिन हमें गलतियां नहीं खानी चाहिए थी। एक तो हम कैलेंडरों के बारे में खता खा गये। फिर हमें नटवर भी तो धोखा दे गया।' सुरेश ने ढाढ़स बँधाया, 'अरे हार-जीत और उतार-चढ़ाव तो आते ही रहते हैं। सवाल केवल अन्तिम विजय का होता है। अच्छा यह तो बताओ कि वह इनाम के तीन हजार रुपये तुम्हें मिले?'

मोहिन्दर ने उत्तर देने का भार संभाला, 'नहीं साहब! सच तो यह है कि उस रकम पर कोई इनाम नहीं रखा गया था।' वह तो नटवर की ईजाद थी। हां, पुलिस विभाग की ओर से हमें प्रमाण-पत्र जरूर मिला है।'

सुरेश बोला, 'इनाम ही तो सब कुछ नहीं होता भाई। सफलता खुद ही सबसे बड़ा इनाम है। अच्छा तो यह बताओ कि अलीबाबा का क्या हुआ?'

श्याम ने कहा, 'अलीबाबा जिन्दा है। हम तीनों उसके मेहमान रह चुके हैं। जब अलीबाबा को जग्गी का पत्र मिला, उसे शक हुआ कि जग्गी उसे पत्र द्वारा संदेश देना चाहता है। क्योंकि जग्गी ने जेल में वादा किया था कि उसे कुछ हुआ तो वह अपना राज उसे बता देगा। पत्र भेजने के कुछ सप्ताहों बाद ही इंग्लैंड में जग्गी का निधन हो गया। अलीबाबा पत्र की पहेली सुलझा न सका तो उसने अपने ट्रंक में छुपा दिया।

फिर एक दिन जब वह सैर कर अपने होटल लौट रहा था तो काऊंटर क्लर्क ने उसे बताया कि कुछ लोग उससे मिलने आये थे। हुलिए से उसने अन्दाजा लगा लिया वे सुलेमान तिड़ी, बदलू व भीमा थे। वह घबरा गया। वे गुंडे उसका अपहरण कर सकते थे। और उसे पत्र का भेद पूछने के लिए यातना दे सकते थे। उसे पत्र के रहस्य का खुद पता नहीं था। अगर पता होता तो वह सीधे पुलिस को बता देता। वह इतना घबरा गया कि बगैर अपने कमरे में गए लौट गया और गायब हो गया। कमरे में उसका ट्रन्क पड़ा रह गया जो बाद में नीलाम कर दिया गया।'

'तो अलीबाबा मरा नहीं था! लेकिन रानी ने तो बताया था कि वह आदमियों